A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 01 जून 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 261, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailĐcom
facebookĐcom/subahsaverenews
wwwĐsubahsavereĐnews
twitterĐcom/subahsaverenews

ऐतिहासिक अवसर...

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इंदौर में 31 मई से शुरू हुई मेट्रो ट्रेन में यात्रा की।

लोकमाता देवी अहिल्याबाई ने विकास के साथ विरासत को सहेजा था: पीएम मोदी

प्रधानमंत्री के नेतृत्व में जापान को पीछे छोड़ भारत विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना – मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि लोकमाता देवी अहिल्याबाई राष्ट्र निर्माण में नारी शक्ति के अमूल्य योगदान का प्रतीक हैं। समाज में बड़ा परिवर्तन लाने वाली लोकमाता देवी अहिल्या को श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए प्रधानमंत्री श्री

- **इंदौर मेट्रो का शुभारंभ और दतिया व सतना एयरपोर्ट का लोकार्पण**
- **प्रधानमंत्री ने प्रदेश के 1271 अटल ग्राम सेवा सदनों के लिए 483 करोड़ रूपए की पहली किस्त जारी की**

मोदी ने देवी अहिल्या के प्रेरक कथन 'जो कुछ भी हमें मिला है वह जनता द्वारा दिया ऋण है- जिसे हमें चुकाना है' का स्मरण किया। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार लोकमाता अहिल्याबाई के इन्हीं मूल्यों पर चलते हुए कार्य कर रही है, 'नागरिक देवो भवः' वर्तमान में गवर्नेंस का मंत्र है। लोकमाता देवी अहिल्याबाई की 300वीं जयंती, सभी देशवासियों के लिए प्रेरणा और राष्ट्र निर्माण के लिए हो रहे भागीरथी प्रयासों में अपना योगदान देने का अवसर है। देवी अहिल्याबाई का मानना था कि 'जनता की सेवा और उनके जीवन में सुधार लाना ही शासन का उद्देश्य है', उनकी इस सोच को आगे बढ़ाने के लिए हमारी सरकार प्रतिबद्ध है। हमारी सरकार वूमेन लेड डेवलपमेंट के विजन को विकास की धुरी बना रही है, सरकार की हर बड़ी योजना के केंद्र में माताएं- बहने -बेटियां हैं। देश में गरीबों के लिए चार करोड़ घर बनाए जा चुके हैं और इनमें से अधिकतर घर माता -बहनों के नाम पर हैं, वे पहली बार घर की मालकिन बनी हैं। सरकार हर घर तक नल से जल पहुंचा रही है, माता-बहनों को असुविधा न हो और बेटियां पढ़ाई लिखाई में ध्यान दे सकें, इस उद्देश्य से बिजली, उज्जवला गैस भी उपलब्ध कराई गई हैं।

हमारे लिए आज का दिन अद्वितीय है: सीएम यादव

मुख्यमंत्री ड़ॉ. यादव ने स्वागत उद्बोधन में कहा कि दुनिया के सबसे बड़े गणतंत्र के नायक प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी देवी अहिल्याबाई होल्कर की पावन धरा पर पधारे हैं। हमारे लिए आज का दिन अद्वितीय है। लोकमाता अहिल्या महारानी का जन्म 300 वर्ष पूर्व हुआ। उन्होंने एक आदर्श बहू और आदर्श पत्नी रहते हुए शासन चलाया। देवी अहिल्या ने घर के धन और शासन के धन का अंतर बताया। उनके कार्यकाल को देखा जाए तो आज अहिल्या माता के सुशासन के आधार पर ही पूरा शासन तंत्र चल रहा है। ग्वालियर की राजमाता सिंधिया ने भी भारतीय लोकतंत्र को मजबूत किया। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने इंदौर की सुमित्रा ताई को लोकसभा अध्यक्ष की जिम्मेदारी देकर प्रदेश का मान बढ़ाया। आज राष्ट्पति भी एक महिला हैं।

सिंदूर हमारी परंपरा है, यह हनुमान जी को चढ़ता है और बहनों के लिए सम्मान का प्रतीक है

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि भारत संस्कृति का देश है, सिंदूर हमारी परंपरा है। यह हनुमान जी को चढ़ता है और बहनों के लिए सम्मान का प्रतीक है। यही सिंदूर अब भारत के शौर्य का प्रतीक बना है। पहलगाम में आतंकियों ने भारतीयों का खून ही नहीं बहाया, हमारी संस्कृति पर प्रहार किया है। उन्होंने भारत को बांटने की कोशिश की। आतंकियों ने भारत की नारी शक्ति को चुनौती दी, लेकिन यह शक्ति उनके लिए काल बन गई। ऑपरेशन सिंदूर बंद नहीं हुआ है, यह आतंकियों के खिलाफ सबसे सफल ऑपरेशन है। भारत का हर नागरिक कह रहा है कि अगर तुम गोली चलाओगे तो गोली का जवाब गोले से दिया जाएगा।

लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर नाम सुनकर मन में श्रद्धा का भाव आता है

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने मां भारती और मातृशक्ति को प्रणाम करते हुए कहा कि महासम्मेलन में बड़ी संख्या में आईं माताओं-बहनों के दर्शन पाकर मैं धन्य हो गया हूं। लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर नाम सुनकर मन में श्रद्धा का भाव आता है। उनके संकल्पों से सीख मिलती है कि परिस्थितियां कितनी भी विपरीत क्यों न हो इच्छाशक्ति से उन्हें पूर्ण किया जा सकता है। आज से 250-300 साल पहले जब देश गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा था, तब उन्होंने इन कार्यों को पूर्ण किया। वे हमेशा शिवलिंग साथ लेकर चलती थीं। उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में राज्य का कार्यभार संभाला और राज्य को समृद्धि दी। देवी अहिल्याबाई भारत की विरासत की संरक्षक थीं।

देवी अहिल्या ने महेश्वरी साड़ी के लिए नए उद्योग लगाए

देवी अहिल्या ने महेश्वरी साड़ी के लिए नए उद्योग लगाए। वे हुनर की पारखी थीं, जूनागढ़ (गुजरात) से कुछ बुनकर परिवारों को महेश्वर लाकर साड़ी उद्योग को बढ़ावा दिया। आज महेश्वरी साड़ी देश की महिलाओं की पसंद बन चुकी है। देवी अहिल्याबाई ने समाज सुधार की दिशा में कार्य किए। वे हमेशा मातृशक्ति के विकास के बारे में सोचती थीं। उन्होंने बाल विवाह को रोकने के लिए कदम उठाए। उन्होंने समाज सुधारकों को भरपूर समर्थन दिया।

अंतरिक्ष में बीज उगाने जैसे 7 तरह के होंगे प्रयोग

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के गगनयात्री ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला के आगामी मिशन को लेकर बड़ा अपडेट सामने आया है। रिपोर्ट में बताया गया कि वह अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण से जुड़े प्रयोग करेंगे। इसरो के आधिकारिक बयान के अनुसार, 7 माइक्रोग्रैविटी प्रयोगों का चयन किया गया है। ये

विभिन्न राष्ट्रीय अनुसंधान और विकास प्रयोगशालाओं, शैक्षणिक संस्थानों के भारतीय शोधकर्ताओं की ओर से प्रस्तावित किए गए हैं। ये प्रयोग मानव स्वास्थ्य, जीव विज्ञान, मेटरियल रिसर्च, नई दवाओं के विकास और जैव प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों पर केंद्रित होंगे। रिपोर्ट के मुताबिक, 8 जून को शुरू होने वाले इस मिशन में शुभांशु शुक्ला कई तरह के प्रयोग करने वाले हैं। इनमें माइक्रोएल्गी पर अंतरिक्ष के विकिरण का असर और सलाद के बीजों का अंतरिक्ष में उगना अहम है। साथ ही, टार्डिग्रेड नाम के छोटे जीवों की अंतरिक्ष में जीवित रहने और प्रजनन की क्षमता, मांसपेशियों के विकास पर पूरकों का प्रभाव और खाद्य फसलों के बीजों की वृद्धि का भी आंकलन किया जाएगा। इन सारे प्रयोगों में आईएसएस की सुविधाओं का इस्तेमाल होगा और इन्हें सख्त जांच के बाद ही वहां ले जाया जाएगा। इसरो के लिए यह मिशन बहुत खास है, क्योंकि पहली बार कोई भारतीय अंतरिक्ष यात्री आईएसएस पर जाएगा। शुभांशु शुक्ला 1984 में राकेश शर्मा के बाद अंतरिक्ष में जाने वाले दूसरे भारतीय होंगे। इस मिशन में यूरोप के स्लावोस उज्नांस्की-विस्निएव्स्की और हंगरी के तिबोर कपु भी शामिल होंगे।

सुप्रभात

मन रोज़ लौटता है
उन सूने रास्तों को
झांककर
जहां याद का एक अंकुर
फूटा पड़ा है अरसे से
नहीं जानता
ऐसे रास्तों से
बीते मौसम नहीं लौटते
इन बिरवों पर
फूल भी नहीं खिलते
उठते हैं सन्नाटे
और उड़ती है धूल
जो दूर यादों के गांवों से
कभी कभी
मिट्टी के घरों की सौंधी खुशबू
संग ले आती है!

– कौशलेंद्र सिंह

जस्टिस वर्मा का परिवार ही करता था स्टोररूम का इस्तेमाल

जांच पैनल की रिपोर्ट में खुलासा, आग लगने के बाद नकदी हटाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली हाईकोर्ट के तत्कालीन जस्टिस यशवंत वर्मा के सरकारी बंगले पर अधजले नोट मिलने के मामले में नए खुलासे हुए हैं। न्यूज एजेंसी ने सूत्रों के हवाले से बताया कि जिस स्टोर रूम में आग लगने के बाद जली नकदी मिली, वह जस्टिस वर्मा और उनके परिवार के कब्जे में था। जांच समिति ने बंगले के इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्यों, गवाहों और जांच के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला है। समिति ने 50 से ज्यादा लोगों के बयान दर्ज किए। इनमें दिल्ली पुलिस कमिश्नर संजय अरोड़ा और फायर सर्विस के प्रमुख भी थे।

असम में लैंडस्लाइड से 15 की मौत, बाढ़ से भारी तबाही

- 10 हजार लोग हैं प्रभावित, मिजोरम में भी भूस्खलन
- घर-होटल सब ढहे, कई लोगों की मौत की है आशंका

दिसपुर (एजेंसी)। मानसून नॉर्थ ईस्ट राज्यों में पहुंच चुका है। असम, मेघालय, मिजोरम, सिक्किम में भारी बारिश हो रही है। 15 की मौत हो गई है।असम में पिछले 24 घंटों में कामरूप जिले में लैंडस्लाइड के चलते पांच लोगों की मौत हो गई। बाढ़ से 10 हजार लोग प्रभावित हुए हैं। मिजोरम के लॉन्टलाई शहर में लैंडस्लाइड के कारण पांच घर और एक होटल ढहने से कई लोगों के मारे

जाने की आशंका है। उधर सिक्किम में भारी बारिश के कारण थेंग और चुंगथांग इलाकों में भूस्खलन से कई घर मलबे में दब गए। मेघालय में शुक्रवार को तेज बारिश से पूर्वी खासी हिल्स जिले में भी लैंडस्लाइड हुई। एक महिला की मौत हो गई। एक व्यक्ति पानी में डूब गया। मावकिनरू ब्लॉक में पेड़ के नीचे दबने से 15 साल के लड़के की जान चली गई।

जम्मू-कश्मीर में शनिवार को बर्फबारी हुई। इसके चलते गुरेज-बांदीपुरा रोड और मुगल रोड पर ट्रैफिक रोक दिया गया है। हिमाचल प्रदेश में तेज आंधी-बारिश का अलर्ट है। इसे देखते हुए स्थानीय लोगों और टूरिस्ट को एडवाइजरी जारी की गई है। मई में मानसून की दस्तक ने बारिश का नया रिकॉर्ड बना दिया है। देश में 30 मई तक 116.6 मिमी बारिश दर्ज हुई है जो मई में सबसे अधिक बारिश का रिकॉर्ड है। पिछला रिकॉर्ड 1990 का था, तब 110.7 मिमी बारिश हुई थी। सामान्य रूप से मई में औसतन 61.4 मिमी बारिश होती है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 32 °c
न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 01 जून 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

नारी सशक्तिकरण के कीर्तिमान रचते डॉ मोहन यादव

सत्येंद्र जैन
लेखक स्तंभकार है।

भारतीय संस्कृति में नारी जाति को अत्यधिक सम्मान दिया गया है ।देवी की उपमा दी गई है।पुराणों में कहा गया है कि-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः
।यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ॥

अर्थात जिस स्थान पर स्त्रियों की पूजा की जाती है। सत्कार किया जाता है। उस स्थान पर देवता सदा निवास करते हैं, प्रसन्न रहते हैं ।जहाँ नारियों का सम्मान नहीं होता है, वहाँ सभी धर्म और कर्म निष्फ़ल होते हैं।

मध्य प्रदेश की भाजपा सरकार के भागीरथी, यशस्वी ,भूतो न भविष्यति मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव महिला सशक्तिकरण ,नारी जाति के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हैं।उनकी यह प्रतिबद्धता सरकार के निर्णयों में स्पष्ट रूप से प्रतिलक्षित होती है।डॉ मोहन यादव अनेक योजनाओं के माध्यम से महिला समाज का सशक्तिकरण कर रहे हैं।महिलाओं को स्वावलंबी,आत्मनिर्भर, समर्थ बना रहे हैं।

युगांतकारी लाडली बहना योजना

लाड़ली बहना योजना के तहत हर महीने 1.27 करोड़ बहनों के खाते में लगभग 1600 करोड़ रूपये की आर्थिक सहायता सीधे महिलाओं के खातों में पहुंच रही है। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के प्रतिमाह 1250 रुपये के आर्थिक स्तंभन से उनमे स्वावलंबी गुण विकसित हो रहे हैं।रोजगार उन्मुख हो रहीं हैं।उनमे रक्त अल्पता भी दूर हो रही है।उनकी संतानों में पोषण बढ़ रहा है।लगभग 28 हजार करोड़ रुपए की सहायता दी गई है।मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव,वर्ष 2028-29 तक इस राशि को प्रतिमाह 3 हजार रुपए प्रदान करने के लिए संकल्पित हैं।महिला बाल विकास मंत्री निर्मला भूरिया और उनकी टीम, मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के महिला कल्याण के महायज्ञ में सर्वस्व अर्पण कर,संकल्प सिद्धि कर रही हैं।

लाड़ली लक्ष्मी योजना

मुख्यमंत्री लाड़ली लक्ष्मी योजना के तहत वर्ष 2024-25 में 2 लाख 73 हजार 605 बालिकाओं का पंजीकरण हुआ।मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव द्वारा लगभग 223 करोड़ रूपये से अधिक की छात्रवृत्ति यूनि-पे के जरिए वितरित की गई। अब तक 50 लाख 41 हजार 810 बेटियां इस योजना में पंजीकृत हैं।इस योजना का सुखद परिणाम यह हुआ है कि लिंगानुपात 927 से बढ़कर 970 हुआ है।अभूतपूर्व वृद्धि हुई है ।बाल विवाह में भी उल्लेखनीय कमी आई है।समाज में समरसता मे वृद्धि हो रही है।

शासकीय सेवा,निकायों में महिला आरक्षण

शिक्षा विभाग में भी 50 प्रतिशत पद महिलाओं के लिए आरक्षित हैं।मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने अन्य शासकीय सेवाओं में भी महिला आरक्षण की सीमा 33 से बढ़ाकर 35 प्रतिशत कर नवाचार किया है।नवाचार हेतु मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव साधुवाद के पात्र हैं।वर्ष 2028-29 तक लगभग 3 लाख पदों पर शासकीय सेवाओं में भी महिलाओं को लाभ मिलेगा।स्थानीय प्रशासन में 50 प्रतिशत आरक्षण नारी समाज को दिया जा रहा है।पचास प्रतिशत ग्राम पंचायतों में महिलाएँ सरपंच बन कर ग्राम स्वराज को उन्नत कर रहीं हैं।भाजपा की डॉ मोहन यादव सरकार का संकल्प ग्राम उदय से भारत उदय सिद्ध हो रहा है ।राष्ट्र पिता महात्मा गांधी के सपनों को साकार करने में भाजपा की डॉ मोहन यादव सरकार की महत्वपूर्ण भूमिका है ।

मुख्यमंत्री कन्यादान योजना

मुख्यमंत्री कन्यादान विवाह एवं निकाह योजना भी भारत में ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में विख्यात हुई है ।इस योजना के माध्यम से लगभग 6 लाख बेटियों का विवाह या निकाह किया गया है ।लगभग 12 लाख से अधिक नागरिक दांपत्य जीवन में बंधे हैं । मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव की सरकार ने कन्यादान योजना में संशोधन कर 55 हजार की राशि का प्रावधान प्रत्येक जोड़े के लिए किया गया है ।हितग्राही को 49 हजार रुपये की राशि का चेक और 6 हजार कार्यालय खर्च के लिए दिए जाते हैं ।इस योजना से भी समाज में लिंगानुपात बढ़ रहा है।नारी शक्ति का सम्मान बढ़ रहा है ।बाल विवाह प्रथा को भी रोकने में यह योजना मील का पत्थर सिद्ध हुई है।

महिला उद्यमिता

मुख्यमंत्री उद्यम शक्ति योजना ने हजारों महिला समूहों को कम ब्याज पर ऋण दिलाकर उनके छोटे-छोटे व्यवसायों को सहारा दिया है। अब महिलाएं न सिर्फ घर चला रही हैं, बल्कि दूसरों को भी रोजगार दे रही हैं। अब तक 30 हजार 264 महिला समूहों और 12 हजार 685 महिला उद्यमियों को 2 प्रतिशत ब्याज अनुदान के रूप में 648.67 लाख की राशि वितरित की जा चुकी है।

प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना

प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना में विगत वर्षों की तरह ही इस वर्ष भी मध्यप्रदेश की डॉ मोहन यादव सरकार द्वारा शत प्रतिशत पात्र हितग्राहियों को आर्थिक सहायता प्रदाय की गई। वर्ष 2024-25 में लगभग 6 लाख 30 हजार 929 हितग्राही महिला पंजीकृत किये गये।

महिलाओं का संबल-वन स्टॉप सेंटर

घरेलू हिंसा, शोषण या किसी भी संकट में फंसी महिलाओं के लिए वन स्टॉप सेंटर उम्मीद की किरण बनकर सहारा प्रदान कर रहे हैं। प्रदेश में 57 वन स्टॉप सेंटर पहले से संचालित हैं। वन स्टाप सेंटर के माध्यम से वर्ष 2024-25 में 31 हजार 763 महिलाओं को सहायता प्रदान की गई है। 8 नए सेंटर पेटलावद, पीथमपुर, मनावर, लसूडिया, साबेंर, मैहर, पांढूर्णा और मऊगंज में स्वीकृत किए गए हैं । लगभग 1.28 लाख संकटग्रस्त महिलाओं को इन केन्द्रों से लाभ मिल चुका है।

कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित आवास

कामकाजी महिलाओं के सुरक्षित, सुखद आवास हेतु मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव यत्नशील हैं। प्रदेश में इंदौर और भोपाल में 250 बेड क्षमता के 3 वर्किंग वुमन हॉस्टल संचालित हैं। इसके अतिरिक्त स्कीम फॉर स्पेशल असिस्टेंट टू स्टेट्स फॉर कैपिटल इन्वेस्टमेंट योजना में वर्ष 2024-25 में 5412 बिस्तरीय 8 नये हॉस्टलों को स्वीकृति दी गई है। इनमें से 4 होस्टल महिला एवं बाल विकास विभाग और 4 होस्टल उद्योग विभाग द्वारा संचालित किये जायेंगे। सिंगरौली, देवास, नर्मदापुरम और झाबुआ में 100-100 बिस्तरों के 4 हॉस्टलों के लिए 40.59 करोड़ रूपये की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। घर से दूर काम करने वाली महिलाओं को सुरक्षित और सुविधाजनक आवास मिलेगा।

एक कॉल पर सहायता

मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव सरकार की महिला हेल्पलाइन 181 और चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 को अब 112 आपात सेवा से जोड़ा गया है। इस प्रकार किसी भी महिला को आपातकाल में मात्र एक कॉल से पुलिस, काउंसलिंग, आश्रय और कानूनी,विधिक सहायता सब एक साथ मिल सकती है। वर्ष 2024-25 में लगभग 82 हजार महिलाओं को त्वरित सहायता मिली है। योजना के प्रारंभ से अब तक एक लाख 57 हजार महिलाओं को लाभ मिल चुका है।

शक्ति -सदन

ऐसी महिलाएं और बच्चियां जो बेहद कठिन हालात में हैं। उनके लिए 13 जिलों में 14 शक्ति सदन संचालित किये जा रहे हैं। उन्हें सुरक्षित अस्थायी आश्रय मिलता है। वर्ष 2024-25 में एक हजार 824 महिलाएं और 461 बच्चे लाभान्वित हुए है। आगामी समय में सभी 10 संभागीय मुख्यालयों में शक्ति सदन स्थापित किये जायेगें।

सशक्त वाहिनी प्रशिक्षण से शासकीय सेवा में 156 चयन

सशक्त वाहिनी के तहत हजारों बालिकाओं को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी और आत्म रक्षा प्रशिक्षण मिला है। इसके तहत 11 हजार से अधिक बालिकाओं को प्रतियोगी परीक्षाओं के लिये शैक्षणिक एवं शारीरिक प्रशिक्षण दिया गया। 156 युवतियों का विभिन्न सरकारी पदों पर चयन हुआ। लगभग 2.6 लाख से अधिक महिलाओं ने सुरक्षा और अधिकारों को लेकर जागरूकता अभियान में भाग लिया।

हम होंगे कामयाब

राज्य सरकार द्वारा नारी शक्ति मिशन के तहत जिला, परियोजना और ग्राम स्तर पर 100 दिवसीय जागरूकता हम होंगे कामयाब अभियान संचालित किया गया। इस अभियान के अंतर्गत प्रदेश में जेंडर संवादों, घरेलू हिंसा, बाल विवाह, सायबर सुरक्षा, कार्यस्थल पर उत्पीड़न और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों की महिलाओं को जानकारी एवं अपने अधिकारों के लिए खड़ा होना भी सिखाया गया।

लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर के अद्वितीय प्रशासकीय गुणों से प्रेरणा प्राप्त कर भागीरथी मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में सहस्त्रों प्रयासों को फलीभूत करते हुए कीर्तिमान रचते जा रहे हैं।

- इति श्री।

हमारी ओर जो आंख उठाएगा घर में घुसकर जवाब देंगे

- जयपुर में जेपी नड्डा बोले-पाकिस्तान ने घुटने टेक दिए
- बीजेपी चीफ बोले-आज रिपोर्ट कार्ड की पॉलिटिक्स हो रही

जयपुर (एजेंसी)। बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और केंद्रीय स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्री जेपी नड्डा आज (शनिवार) एक दिवसीय दौरे पर जयपुर आए हैं। एयरपोर्ट के बाहर नड्डा ने कहा- ऑपरेशन सिंदूर, सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक ने सिद्ध कर दिया कि अगर कोई हमारी तरफ आंख उठाएगा तो उसको घर में घुसकर जवाब दिया जाएगा। चार दिन में पाकिस्तान ने घुटने टेक दिए। यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नेतृत्व की क्षमता है। भारतीय सेना ने नौ आतंकवादी ठिकानों को नष्ट कर दिया। आज पीएम मोदी के नेतृत्व में देश सुरक्षित महसूस कर रहा है। ऑपरेशन सिंदूर अभी रुका नहीं है, यह चलता रहेगा। नड्डा ने राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में कार्यक्रम में कहा- भजनलाल ने अपनी स्पीच में योजनाओं का जिक्र किया। हम आपके बीच आते हैं। अपनी योजनाओं का जिक्र करते हैं या फिर रिमोट के जरिए सीधे आपके खाते में देकर जाते हैं।

शशि थरूर ने दिलाई भारत को बड़ी कामयाबी

ऑपरेशन सिंदूर पर बयान बदलने को तैयार हुआ कोलंबिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर पर भारत के रुख को दुनिया के सामने रखने के लिए अलग-अलग देशों में गए सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल को बड़ी सफलता मिली है। 7 मई को पाकिस्तानी आतंकवादियों के खिलाफ हुए ऑपरेशन सिंदूर में आतंकियों की मौतों पर संवेदना व्यक्त करने वाला कोलंबिया अपने बयान को बदलने के लिए तैयार हो गया है। प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करने वाले कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने कहा, उन्होंने अपना वह बयान वापस ले लिया है, जिससे हमें पहले निराशा हुई थी अब वह हमारे समर्थन में एक बयान जारी करेंगे। थरूर का यह बयान उनके पिछले बयान के एक दिन बाद आया है, जिसमें उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर पर कोलंबिया द्वारा अपनाए गए रुख पर निराशा जाहिर की थी। संयुक्त राज्य अमेरिका में भारत के पूर्व राजदूत और भारतीय जनता पार्टी के नेता तरनजीत सिंह संधू ने कहा कि कोलंबिया सरकार के सामने सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल ने ऑपरेशन सिंदूर पर भारत सरकार का पूरा पक्ष रखा है। प्रतिनिधिमंडल के विस्तृत स्पष्टीकरण ने कोलंबिया के रुख को पलटने में मदद की। उन्होंने कहा, आज सुबह हमारे नेता और कोलंबिया के कार्यवाहक विदेश मंत्री के बीच में लंबी चर्चा हुई। पूरी टीम ने उन्हें समय सीमा समझाते हुए.. पूरी घटना की जानकारी दी। शायद इससे पहले उनके द्वारा दिए गए बयान में घटनाक्रम के कुछ मुख्य बिंदु छूट गए थे। इसकी वजह से उन्होंने ऐसा बयान दिया था।

ब्रह्मोस के नए अवतार से कांप उठेंगे दुश्मन

रेंज भी हुई दोगुनी,मारक ताकत में भी इजाफा

नई दिल्ली (एजेंसी)। अब सिर्फ लाहौर, इस्लामाबाद या रावलपिंडी नहीं, चीन के अंदर गहराई तक मौजूद सैन्य ठिकानों को भी भारत के ब्रह्मोस मिसाइल से निशाना बनाया जा सकेगा। भारत और रूस की संयुक्त परियोजना से बनी सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल ब्रह्मोस को अब और अधिक घातक बनाने की दिशा में पांच बड़े बदलाव किए जा रहे हैं। 'ऑपरेशन सिन्दूर' में ब्रह्मोस की कामयाबी के बाद यह फैसला लिया गया है। ब्रह्मोस नाम दो नदियों भारत की ब्रह्मपुत्र और रूस की मस्कोवा से मिलकर बना है। इसे तैयार किया है ब्रह्मोस एयरोस्पेस लिमिटेड ने, जो भारत की और रूस का संयुक्त उपक्रम है। फिलहाल ब्रह्मोस मिसाइल चार रूपों में भारतीय सेना के पास है जो जमीन से ट्रक के जरिए, युद्धपोतों से, सुखोई-30 फाइटर लड़ाकू विमान से और पनडुब्बी से दागे जाने वाली प्रणाली है। यह पारंपरिक विस्फोटक के साथ-साथ न्यूक्लियर हथियार भी ले जाने में सक्षम है

और इसकी गति ध्वनि की गति से तीन गुना है। एनडीटीवी की रिपोर्ट की मानें तो अब जो नए बदलाव हो रहे हैं, उनमें सबसे बड़ा है इसकी रेंज, जो 290-400 किमी से बढ़कर अब 800 किमी तक पहुंच जाएगी। साथ ही इसे सुपरसोनिक से हाइपरसोनिक मिसाइल की श्रेणी में लाया जा रहा है, यानी इसकी गति अब ध्वनि से पांच गुना अधिक हो सकती है। रिपोर्ट्स के अनुसार, रूस ने पहले ही ब्रह्मोस मार्क-2 का परीक्षण शुरू कर दिया है और यह जल्द ही भारतीय सेना के जखीरे में भी शामिल हो सकता है।

सीडीएस से सवाल-

पाकिस्तान ने कितने भारतीय फाइटर जेट युद्ध में गिराए

- जनरल चौहान ब्लूमबर्ग से बोले-महत्वपूर्ण यह नहीं,विमान गिरे,जरूरी यह-क्यों गिरे

नई दिल्ली (एजेंसी)। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) अनिल चौहान ने शनिवार को पाकिस्तान के साथ संघर्ष में भारतीय फाइटर जेट गिरने पर बात की। उन्होंने कहा कि असली मुद्दा यह नहीं है कि कितने विमान गिरे, बल्कि यह है कि वे क्यों गिरे। सीडीएस ने यह बात सिंगापुर में ब्लूमबर्ग को दिए इंटरव्यू में कही। वे यहां शांगरी-ला डायलॉग कार्यक्रम में हिस्सा लेने पहुंचे हैं। पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत ने 7 मई को पाकिस्तान के 9 आतंकी ठिकानों को तबाह कर दिया था। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल अनिल चौहान के मुताबिक यह एक नॉन कॉन्टेक्ट, मल्टी डोमेन मिशन था, जिसमें साइबर हमले और नैरेटिव के खिलाफ अभियान, खुफिया क्षमताओं का प्रदर्शन जैसे पहलू शामिल थे। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान हमारा 15 फीसदी समय केवल फेक नैरेटिव का मुकाबला करने में ही लग गया। सिंगापुर में शांगरी-ला डायलॉग के दौरान बोलते हुए जनरल चौहान ने कहा कि 7 मई को शुरू हुए ऑपरेशन सिंदूर में हम प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों तरह के युद्ध लड़ रहे थे। यह लड़ाई पहलगाम आतंकी हमले के बाद हमारी तरफ से आतंकी ठिकानों पर की गई कार्रवाई के बाद शुरू हुई थी। यह लड़ाई भविष्य के युद्धों का एक उदाहरण है। सीडीएस चौहान ने सीमा पर भारतीय सेना के आधुनिकीकरण पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पाकिस्तान के पास चीनी हथियार थे और उनके पास चीनी सैटेलाइट तस्वीरों का प्रयोग करने की स्वतंत्रता थी लेकिन इसके बाद भी वह भारत पर की गई कार्रवाई के अपने दावे के समर्थन में कोई सबूत नहीं दे पाए.. क्योंकि वह ऐसा करने में सफल हुए ही नहीं। वहीं दूसरी तरफ भारत ने आकाश जैसी स्वदेशी प्रणालियों पर भरोसा किया, प्रभावी सिस्टम नेटवर्किंग के माध्यम से सफलता प्राप्त की। हमारी घरेलू और विदेशी दोनों रडार सिस्टम के बीच में एक बेहतर रक्षा संरचना बनी हुई थी, जिसका हमें लाभ भी मिला।

लैंड फॉर जॉब में लालू यादव को लगा तगड़ा झटका

- दिल्ली हाईकोर्ट ने लोअर कोर्ट की कार्यवाही पर रोक से किया इनकार

पटना (एजेंसी)। दिल्ली उच्च न्यायालय ने राजद प्रमुख और पूर्व रेल मंत्री लालू प्रसाद यादव की उस याचिका को खारिज कर दिया है। जिसमें उन्होंने 'जमीन के बदले नौकरी' घोटाले से संबंधित कथित भ्रष्टाचार मामले में निचली अदालत की कार्यवाही पर रोक लगाने की मांग की थी। इस घोटाले की जांच सीबीआई ने की थी। आरजेडी सुप्रीमो लालू यादव की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने हाईकोर्ट में दायर याचिका में कहा था कि इस मामले में प्राथमिकी व जांच कानूनसंगत नहीं है। याचिका में तर्क दिया गया कि जब प्राथमिकी और जांच ही सही नहीं है, तो आरोप पत्र कानूनी रूप से कायम नहीं रह सकता। इस मामले में सीबीआई ने भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की धारा 17ए के तहत पूर्व केन्द्रीय मंत्री के खिलाफ मुकदमा चलाने की पूर्व मंजूरी प्राप्त करने में विफल रही है। यह कानून की अनिवार्य आवश्यकता है। सिब्बल ने कहा सत्र अदालत 2 जून को आरोपों पर दलीलें सुनने वाला है। सीबीआई की ओर से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता डी.पी. सिंह ने याचिका का विरोध किया।

यूपी पंचायत चुनाव में इस बार 500 प्रधान ज्यादा बनेंगे

- 75 नए ब्लॉक प्रमुख भी होंगे,शासन ने डीएम और डीपीआरओ से मांगी रिपोर्ट

लखनऊ (एजेंसी)। पंचायतीराज विभाग और ग्राम्य विकास विभाग ने प्रदेश में पंचायत चुनाव 2026 की तैयारियां शुरू कर दी है। इस बार 500 नए ग्राम प्रधान बनेंगे। साथ ही 75 ब्लॉक प्रमुख भी पहली बार बनेंगे। पंचायतीराज राज विभाग ने जहां पंचायतों के पुनर्गठन की प्रक्रिया को शुरू किया है। वहीं ग्राम्य विकास विभाग नए ब्लॉक के गठन की तैयारी कर रहा है। सभी जिलाधिकारियों और जिला पंचायतराज अधिकारियों से 5 जून तक रिपोर्ट मांगी गई है। पंचायतीराज चुनाव 2021 के दौरान यूपी में 58 हजार 189 ग्राम पंचायतें और 826 ब्लॉक (विकासखंड) थे, लेकिन नगरीय निकाय चुनाव के दौरान सरकार ने करीब 107 नई नगर पंचायतों का गठन किया था। नई नगर पंचायतों के गठन के चलते 494 ग्राम पंचायतों को शहरी सीमा में शामिल किया था। अब 57 हजार 695 ग्राम पंचायतें बची हैं। पंचायतीराज विभाग के अधिकारी ने बताया, एक ग्राम पंचायत में कम से एक एक हजार की आबादी होनी चाहिए। यूपी में कई ग्राम पंचायतें ऐसी हैं, जिनकी आबादी तीन-चार हजार से अधिक है। जिन ग्राम पंचायतों की आबादी अधिक और पंचायत में गांव की संख्या भी अधिक है, उन्हें अलग कर नई ग्राम पंचायत का पुनर्गठन किया जाएगा। प्रदेश में करीब 500 नई ग्राम पंचायतों का गठन किया जाएगा। इनका चुनाव भी इस बार पंचायत चुनाव के साथ ही होंगे, यानी 500 ज्यादा प्रधान चुने जाएंगे। डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने 2022 में प्रदेश में 75 नए ब्लॉक बनाने की घोषणा की थी। मौर्य का कहना है कि कुछ ब्लॉक बहुत बड़े-बड़े हैं। वहां जनता से जुड़े काम और विकास कार्य कराने में भी दिक्कत होती है।

राजनीतिक हित के हिसाब से होगा परिसीमन

पंचायतीराज विभाग के अधिकारी बताते हैं कि यह पहले से होता रहा है कि सत्तारूढ़ दल के हिसाब से ही ग्राम पंचायत और विकासखंड का पुनर्गठन होता है। नए विकासखंड में सत्तारूढ़ दल के वोट बैंक वाली ग्राम पंचायतों को ही शामिल किया जाता है। ताकि सरकार से जुड़े दल के ज्यादा से ज्यादा ब्लॉक प्रमुख चुनाव जीतकर आएं। उधर, राजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि पंचायत चुनाव को विधानसभा चुनाव 2027 का सेमीफाइनल माना जा रहा है। लिहाजा भाजपा और योगी सरकार की ओर से ग्राम पंचायतों और ब्लॉक का गठन इस तरह कराया जाएगा कि ताकि पंचायत चुनाव के साथ विधानसभा चुनाव में भी उसका राजनीतिक लाभ उठाया जा सके। राज्य निर्वाचन आयोग के पूर्व आयुक्त एसके अग्रवाल ने कहा, पंचायत पुनर्गठन के पीछे राजनीतिक और प्रशासनिक कारण भी रहते हैं। यह सही है कि परिसीमन और पुनर्गठन सरकार के स्तर से ही होता है। ग्राम पंचायतों के पुनर्गठन में भाजपा, सपा, अपना दल, रालोद, सुभासपा, निषाद पार्टी और कांग्रेस के विधायक भी सक्रिय हो गए हैं।

विश्व मल्टीपल स्क्लेरोसिस दिवस 2025 पर एम्स भोपाल द्वारा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

भोपाल। एम्स भोपाल ने कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में, 30 मई 2025 को विश्व मल्टीपल स्क्लेरोसिस दिवस के उपलक्ष्य में एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। इस वर्ष की थीम 'मेरा एमएस निदान ' रही, जिसका उद्देश्य मल्टीपल स्क्लेरोसिस (एमएस) के बारे में जनसामान्य में जागरूकता फैलाना, शीघ्र निदान को बढ़ावा देना और एमएस से पीड़ित रोगियों के प्रति समाज में सहानुभूति की भावना को सशक्त करना रहा।

यह कार्यक्रम एम्स भोपाल के न्यूरोलॉजी विभाग द्वारा आयोजित किया गया, जिसमें विशेषज्ञ चिकित्सकों, छात्रों और रोगियों ने सहभागिता की। विशेषज्ञों ने बताया कि मल्टीपल स्क्लेरोसिस एक न्यूरोडीजेनेरेटिव ऑटोइम्यून विकार है, जो मस्तिष्क एवं रीढ़ की हड्डी को प्रभावित करता है। इसके लक्षण कई बार सामान्य प्रतीत होते हैं, जिससे निदान में विलंब हो सकता है, इसलिए समय पर पहचान और उचित उपचार अत्यंत आवश्यक है। कार्यक्रम में एमएस रोगियों के अनुभव साझा किए गए और उनके लिए एक सहायक एवं समावेशी समाज की आवश्यकता पर बल दिया गया। इस अवसर पर प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने कहा कि मल्टीपल स्क्लेरोसिस एक गंभीर एवं चुनौतीपूर्ण स्थिति है, जो रोगी के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक जीवन को प्रभावित करती है। एम्स भोपाल में हमारा प्रयास न केवल उच्चस्तरीय उपचार उपलब्ध कराना है, बल्कि जागरूकता फैलाकर इस रोग से पीड़ित व्यक्तियों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ना भी है।

विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर एम्स भोपाल में जागरूकता कार्यक्रमों का हुआ आयोजन

भोपाल। एम्स भोपाल ने कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में 31 मई 2025 को विश्व तंबाकू निषेध दिवस के अवसर पर विविध जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस दिवस का उद्देश्य तंबाकू और उसके उत्पादों के सेवन से होने वाले स्वास्थ्य, पारिवारिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय नुकसान के प्रति लोगों को जागरूक करना है। विश्व स्वास्थ्य संगठन हर वर्ष 31 मई को इस दिवस का आयोजन करता है। वर्ष 2025 के लिए इसका थीम है । अपील को उजागर करना־ तंबाकू और निकोटीन उत्पादों पर उद्योग की रणनीति को उजागर करना । यह थीम तंबाकू व निकोटीन उद्योगों द्वारा विशेषकर युवाओं को लक्ष्य कर अपने उत्पादों को आकर्षक दिखाने के लिए अपनाई जा रही भ्रामक रणनीतियों को सामने लाने और उन्हें चुनौती देने पर केंद्रित है। तंबाकू का सेवन विश्व स्तर पर एक गंभीर स्वास्थ्य संकट बना हुआ है। यह फेफड़ों, मुंह, गले, मूत्राशय, अग्न्याशय, बृहदान्त्र, और गर्भाशय ग्रीवा जैसे कई अंगों के कैंसर का प्रमुख कारण है। अनुमानों के अनुसार, तंबाकू के उपयोग से हर वर्ष विश्व में

एक करोड़ से अधिक लोगों की मृत्यु होती है। इसके अलावा, तंबाकू पर्यावरण पर भी गहरा नकारात्मक प्रभाव डालता है। इस अवसर पर प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने कहा־ तंबाकू निषेध दिवस न केवल स्वास्थ्य जागरूकता के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह युवाओं और समाज को तंबाकू और निकोटीन उद्योगों की भ्रामक रणनीतियों के विरुद्ध जागरूक और सतर्क बनाने का भी एक सशक्त माध्यम है। एम्स भोपाल इस दिशा में निरंतर प्रयासरत है कि हम न केवल रोगों का उपचार करें, बल्कि उनकी रोकथाम और जनजागरूकता में भी अग्रणी भूमिका निभाएं।

प्रधानमंत्री ने किया दतिया एयरपोर्ट का उद्घाटन

केन्द्रीय नागरिक उडडयन मंत्री नायडू की उपस्थिति में हुआ दतिया एयरपोर्ट का शुभारंभ

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर की 300वीं जयंती पर भोपाल में हुए महिला सशक्तिकरण महासम्मेलन के दौरान दतिया विमानतल का वर्चुअली उद्घाटन किया। दतिया में स्थानीय स्तर पर हुए कार्यक्रम में केन्द्रीय नागरिक उडडयन मंत्री श्री राममोहन नायडू ने दतियावासियों को एयरपोर्ट के लिए बधाई और शुभकामनाऐं दी। उन्होंने कहा कि यह दतियावासियों के लिए उमंग और उत्साह का दिन है। मैं धार्मिक नगरी की पावन धरा पर पहुँचकर शांति एवं सकरात्मकता का अनुभव कर रहा हूँ। लोकमाता देवी अहिल्याबाई की जयंती का यह दिन महिला शक्ति को समर्पित है। मातृशक्ति को सम्मान देने एवं नए अवसर प्रदान करने के लिए केन्द्र एवं राज्य सरकार कृत-संकल्पित है। केन्द्रीय मंत्री श्री नायडू शनिवार को दतिया में

आयोजित एयरपोर्ट के लोकार्पण समारोह को संबोधित कर रहे थे।

केन्द्रीय मंत्री श्री नायडू ने कहा कि दतिया एयरापोर्ट का और भी विस्तार भविष्य में किया जाएगा। इसके साथ ही भिण्ड में भी एयरपोर्ट की सुविधा भविष्य में निश्चित की जाएगी। उन्होंने कहा कि एयर बस जैसी सुविधा, नाइट लेंडिंग कराने की व्यवस्था, एवं बडे प्लेन के उतरने की भी व्यवस्था की जाएगी। केन्द्रीय मंत्री श्री नायडू ने युवाओं को सिविल एवियेशन क्षेत्र में जुड़ने का अनुरोध किया।

दतिया में आज का दिन स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा

किसान कल्याण एवं कृषि विकास और दतिया जिले के प्रभारी मंत्री श्री ऐदल सिंह कंषाना ने कहा है कि दतिया के लिए यह दिन दीपावली से कम नहीं है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की कुशल नेतृत्व और दूरदर्शिता का ही परिणाम है कि आज बुंदेलखण्ड क्षेत्र में दतियावासियों को एयरपोर्ट की सौगात मिली है। इसका श्रेय पूर्व गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्र को जाता है। यह बात आज प्रभारी मंत्री कंषाना ने दतिया एयरपोर्ट के लोकार्पण समारोह के बाद संबोधित करते हुए कही।

पूर्व गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्र ने कार्यक्रम को संबोधित किया। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने वर्चुअल माध्यम से दतिया हवाई यात्रा को हरी झंडी दिखाई। इसी के साथ दतिया से सात महिलाओं ने खजुराहों के लिए उड़ान भरी और महिला शक्ति का नेतृत्व किया। 60 करोड़ की लागत से बना यह एयरपोर्ट 124 एकड़ में फैला हुआ है। जिसका रनवे 1.81 किलोमीटर लंबा एवं 30 मीटर चौड़ा है। पार्किंग में लगभग 50 कारें रखी जा सकती है। चैक इन काउन्टर 2 है। यह एयरपोर्ट एटीआर 72 की क्षमता के लिए बनाया गया है। वर्तमान में दतिया एयरपोर्ट में जो एयरक्राप्ट उतरेंगे वे 19 सीटर रहेंगे।

कार्यक्रम में नवीन एवं नवकरणीय मंत्री श्री राकेश शुक्ला, विधायक सर्वश्री प्रदीप अग्रवाल, रमेश खटीक, नरेन्द्र कुशवाहा, अम्बरीश शर्मा और स्थानीय जनप्रतिनिधिगण एवं अधिकारीगण उपस्थित रहे।

भोपाल मेट्रो टेस्टिंग में पास... अब बस 1 स्टेप दूर

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश की पहली मेट्रो इंदौर में 31 मई को पटरी पर दौड़ गई। भोपाल से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी वर्चुअली लोकार्पण किया। इसके बाद कॉमर्शियल रन शुरू हुआ,आम लोग मेट्रो में सफर किया। भोपाल में अक्टूबर-नवंबर तक मेट्रो दौड़ सकेंगे। इस पूरी प्रोसेस में 4 से 5 महीने लग सकते हैं। इसी बीच मेट्रो के बाकी बचे 3 स्टेशन- एम्स, डीआरएम तिराहा और अलकापुरी के काम भी पूरे कर लिए जाएंगे।

भोपाल में सुभाष नगर से एम्स तक मेट्रो की टेस्टिंग की जा रही है-

सकती है। फिर आप दो स्टेशनों के बीच ही सुनेंगे- अगला स्टेशन डीबी मॉल है...दरवाजे बाईं तरफ खुलेंगे...कृपया दरवाजों से हटकर खड़े हों...। इंदौर मेट्रो का कॉमर्शियल रन शुरू होने के साथ जाना कि भोपाल मेट्रो कॉमर्शियल रन से कितनी दूर है? जानकारी के मुताबिक, भोपाल मेट्रो के लिए रिसर्च डिजाइन एंड स्टैंडर्ड ऑर्गेनाइजेशन (आरडीएसओ) की टीम बुलाई गई है। इसके लिए सभी डॉक्युमेंट्स सब्मिट किए जा चुके हैं। इसके बाद कमिश्नर मेट्रो रेल सेफ्टी टीम इंस्पेक्शन करेगी। टीम की 'ओके' रिपोर्ट मिलने के बाद लोग मेट्रो में सफर कर

भोपाल में मेट्रो का पहला रूट एम्स से करोंद तक 16.05 किलोमीटर लंबा है। इसमें से 6.22 किमी एम्स से सुभाष नगर के बीच का काम प्रायोरिटी कॉरिडोर के रूप में 2018 में शुरू हुआ था। सुभाषनगर से आरकेएमपी स्टेशन तक काम पूरा हो गया है। इसके आगे अलकापुरी, एम्स और डीआरएम मेट्रो स्टेशन तक ट्रैक का काम हो चुका है और मेट्रो यहां तक पहुंच चुकी है। वहीं, दोनों स्टील ब्रिज की लोड टेस्टिंग भी की जा चुकी है।

भोपाल में पूर्व सीएम शिवराज ने किया था ट्रायल

3 अक्टूबर 2023 को भोपाल में पहली बार मेट्रो ट्रैक पर दौड़ी थी। तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने सुभाषनगर से रानी कमलापति स्टेशन तक मेट्रो में सफर किया था। इसके बाद से ही लगातार टेस्टिंग की जा रही है। मेट्रो सबसे ज्यादा स्पीड 80ч्यद्व प्रति घंटे से भी दौड़ चुकी है। इतनी ही स्पीड में कॉमर्शियल रन भी होगा। हालांकि, इससे पहले सुरक्षा के तमाम पैमाने जांचें जाएंगे। इसे सीएमआरएस टीम ही जांचेंगी। भोपाल में यह टीम अगले कुछ महीने में आ जाएगी।

फोटो: प्रवीण वाजपेई

प्रधानमंत्री मोदी ने किया प्रदर्शनी का अवलोकन

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर की 300वीं जयंती के अवसर पर महिला सशक्तिकरण महासम्मेलन में लोकमाता देवी अहिल्याबाई पर केंद्रित प्रदर्शनी का अवलोकन किया। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव भी इस अवसर पर उपस्थित थे। लोकमाता अहिल्या बाई द्वारा सुशासन, महिला स्वावलंबन, धार्मिक स्थलों के उन्नयन के लिए संचालित गतिविधियों को प्रदर्शनी के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। इसके साथ ही देवी अहिल्या बाई पर केंद्रित पुस्तकें और शोध पत्र भी यहां प्रदर्शित हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने हथकरघा-हस्तशिल्प को समर्पित महिलाओं और ड्रोन दीदी से संवाद किया। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने प्रदेश में महिला सशक्तिकरण के लिए जारी गतिविधियों, ग्रामीण आवास योजना, ग्रामीण पर्यटन, कृषि आदि क्षेत्र में महिलाओं द्वारा की जा रही पहल और ग्रामीण व नगरीय निकायों में महिला प्रतिनिधित्व के संबंध में भी

जानकारी प्राप्त की। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने प्रदर्शनी में प्रदेश में अधोसंरचना विकास के अंतर्गत संचालित गतिविधियों, धार्मिक लोकों के विकास, सहित राज्य की अन्य विकासोन्मुखी नवाचारों का भी अवलोकन किया।

मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा 16 जून को मनाया जाएगा स्थापना दिवस

कंपनी मुख्यालय में होगा वृक्षारोपण और रक्तदान शिविर

भोपाल (नप्र)। म.प्र. मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कम्पनी द्वारा कंपनी के स्थापना दिवस के अवसर पर 16 जून को कंपनी मुख्यालय के साथ ही भोपाल क्षेत्र तथा ग्वालियर क्षेत्र में विभिन्न सांस्कृतिक व सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। इस दौरान गोविन्दपुरा स्थित मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी मुख्यालय में बिजली कार्मिकों द्वारा वृक्षारोपण करने के साथ ही रक्तदान शिविर का आयोजन कर रक्तदान किया जाएगा। इसी प्रकार मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के मैदानी कार्यालयों द्वारा भी विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करने के साथ ही शत-प्रतिशत बिजली बिल भुगतान करने वाले बिजली उपभोक्ताओं और कंपनी कार्यों में सहयोग करने वाले स्थानीय नागरिकों को सम्मानित किया जाएगा।

मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कम्पनी ने बताया है कि राजधानी भोपाल में 16 जून को गोविन्दपुरा स्थित कंपनी मुख्यालय में प्रातः 11 बजे कंपनी के स्थापना दिवस के अवसर पर कार्मिकों को निष्ठापूर्वक कार्य करने की शपथ दिलाई जाएगी। इस अवसर पर गोविन्दपुरा स्थित कंपनी के प्रांगण के सभी कार्यालयों के अधिकारी और कर्मचारी एमडी कार्यालय के समक्ष एकत्रित होंगे। इसी प्रकार कंपनी के कार्यक्षेत्र के सभी क्षेत्रीय, वृत्त, संभाग तथा विद्युत वितरण केन्द्रों पर कार्यालय प्रमुख के द्वारा कार्मिकों को निष्ठापूर्वक कार्य करने की शपथ दिलाई जाएगी।

मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कम्पनी ने बताया है कि 31 मई 2002 को कंपनी का गठन हुआ था और इस अवसर को कंपनी के स्थापना दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दौरान कंपनी के सभी कार्यालयों में शपथग्रहण, वृक्षारोपण, रक्तदान शिविर, सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन, उच्चदाब-निम्नदाब बिजली उपभोक्ताओं और नागरिकों का सम्मान, कार्यालयों की साफ-सफाई, कार्यालयीन रिकार्ड का व्यवस्थित रखरखाव, अनुपयोगी सामग्री का निपटान जैसे कार्य भी किये जाएंगे।

हमारा मूल मंत्र है – 'एक देश , एक कृषि , एक टीम' : केंद्रीय मंत्री शिवराज

यह पहल भारतीय कृषि विज्ञान एवं किसानों की विकास गाथा में मील का पत्थर साबित होगी

भोपाल। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण व ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' के तहत आज विभिन्न राज्यों के विधायकों से वचुर्अल संवाद किया। श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि हमारा यह अभियान 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' (वीकेएसए 2025), एक सरकारी योजना नहीं बल्कि एक जन आंदोलन है। इसका उद्देश्य 29 मई से 12 जून 2025 तक 1 करोड़ से अधिक किसानों से सीधा संवाद करना है। इसका शुभारंभ पुरी, ओडिशा से हुआ और अब यह पूरे देश में किसान जागरूकता की लहर बन चुका है।

श्री चौहान ने बताया कि 2170 टीमों ने अभी तक 7368 गांवों में 4416 दौरे कर 795000 किसानों को इस अभियान से जोड़ दिया है। इस अभियान के तहत गठित की गई टीमें देश के सभी राज्यों में किसानों के साथ कृषि ज्ञान एवं विज्ञान को साझा करेंगी तथा विकसित कृषि के लक्ष्य को वास्तविकता में बदलने के लिए उन्हें प्रेरित करेंगी। ये टीमें गाँवों मे जाकर किसानों को जलवायु अनुकूल किस्मों का उपयोग, उर्वरकों का संतुलित उपयोग, मृदा में पोषक तत्वों की जानकारी एवं उनका संरक्षण तथा फसलों में लगने वाले रोग एवं उनके उपचार, कृषि में विविधिकरण को बढ़ावा देने वाली तकनीकों के बारे में विस्तृत जानकारी देंगी।

उन्होंने कहा कि वर्तमान चुनौतियों को देखते हुए कृषि में विविधिकरण को बढ़ावा देने वाली तकनीकों प्राकृतिक खेती, कृषि में ड्रोन का उपयोग, पशुपालन, डेयरी एवं मत्स्य पालन इत्यादि, प्रमुख विषयों पर कृषकों को जानकारी देने के लिए यह अभियान बहुत उपयोगी साबित होगा। इस अभियान के तहत इन सभी विषयों पर किसानों के साथ चर्चा होगी और उनकी जिज्ञासाओं का उपयुक्त समाधान भी संबंधित विषय विशेषज्ञों द्वारा किया जायेगा। इस अभियान का त्वरित लाभ किसानों को आगामी खरीफ की फसलों पर होगा। श्री चौहान ने कहा कि सभी संबंधित हितधारकों के साथ मिलकर क्रियान्वित किया जाने वाला यह अभियान विकसित भारत के लिए चलाए जा रहे 'प्रयोगशाला से खेत तक 'कार्यक्रम में सार्थक योगदान देगा तथा उसको सशक्त बनाएगा। हमारा मूल मंत्र है – 'एक देश,एक कृषि , एक टीम'। जहाँ कृषि वैज्ञानिक, अधिकारी और किसान भाई-बहन एक साथ मिलकर भारत को 'विकसित भारत - 2047' की ओर ले जाएंगे।

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने विधायकों से आग्रह करते हुए कहा है कि वे किसानों को प्रोत्साहित करें कि वे वैज्ञानिकों से संवाद करें व प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लें। हमारा उद्देश्य है – कम लागत, अधिक उत्पादन, टिकाऊ खेती, और लाभकारी कृषि।

उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम का एक उद्देश्य यह भी रखा गया है कि कृषि विज्ञान केंद्र के विषय विशेषज्ञ एवं कृषि अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिक, किसानों के द्वार एवं खेतों में जाकर उनके नवाचारों से भी कुछ सीखेंगे। यह एक नवीनतम पहल है जो भारतीय कृषि विज्ञान एवं किसानों की विकास गाथा में मील का पत्थर साबित होगी।

भोपाल समेत 21 जिलों में तेज आंधी-बारिश का अलर्ट

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में नौतपा के सातवें दिन, बादल, कहीं-कहीं बारिश भी हुई। अभी तेज आंधी और बारिश का दौर रहेगा। मौसम विभाग ने भोपाल समेत 21 जिलों में अलर्ट जारी किया है। इधर, शनिवार को ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी भोपाल आ रहे थे, उनके कार्यक्रम और बारिश के अलर्ट के चलते पांडाल के आसपास सीवेज सिस्टम बनाया गया थौ। ताकि, बारिश होती है तो पानी पांडाल में न पहुंचे।

जिन जिलों में आंधी-बारिश का अलर्ट है, उनमें भोपाल, सीहोर, विदिशा, रायसेन, मुरैना, भिंड, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, सिवनी, बालाघाट, मंडला, डिंडौरी, अनूपपुर, उमरिया, शहडोल, मैहर, सतना, रीवा, मऊगंज, सीधी और सिंगरौली शामिल हैं।

सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया कि प्रदेश में बारिश और आंधी की एक्टिविटी रहेगी। ऐसा ही मौसम 3 जून तक रहेगा। हालांकि, तापमान में 3 से 4 डिग्री की बढ़ोतरी देखने को मिलेगी। रात में पारा बढ़ सकता है, लेकिन कहीं भी हीट वेव का अलर्ट नहीं है।

गुना-खजुराहो समेत कई जिलों में तेज बारिश

मध्यप्रदेश के कई जिलों में भी मौसम बदला रहा। नौतपा के लगातार छठवें दिन प्रदेश में आंधी-बारिश का दौर रहा। छतरपुर के खजुराहो में आधा इंच से ज्यादा पानी गिर गया तो गुना, रीवा, अशोकनगर, रायसेन में भी शाम को बारिश हुई। रायसेन में तो तेज बारिश होने से सड़कों पर पानी भर गया। भोपाल में दिनभर बादल छाए रहे।

इधर, कई जिलों में दिन का पारा लुढ़का रहा। ग्वालियर की सबसे गर्म रहा। यहां अधिकतम तापमान 40.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। रीवा में 40.6 डिग्री, टीकमगढ़ में 40.5 डिग्री, सतना-सीधी में 40.4 डिग्री और खजुराहो में 40.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। इकलौते हिल स्टेशन पचमढ़ी में पारा 28.2 डिग्री पर आ गया। वहीं, शिवपुरी में 29 डिग्री और छिंदवाड़ा में 32 डिग्री दर्ज किया गया। बड़े शहरों की बात करें तो भोपाल में 36.6 डिग्री, इंदौर में 34.3 डिग्री, उज्जैन में 36.5 डिग्री और जबलपुर में 38 डिग्री सेल्सियस रहा।

विधानसभा में सत्र के दौरान दिखेगा ड्रेस कोड

वेल ऑफ द हाउस में बैठने वाले अधिकारी-कर्मचारी एक कलर के यूनिफार्म में रहेंगे

भोपाल (नप्र)। विधानसभा सत्र के दौरान अब विधानसभा के अधिकारी कर्मचारी ड्रेसकोड में सदन के भीतर बैठेंगे। इसका कलर कैसा होगा, अभी यह तय किया जाना बाकी है, लेकिन विधानसभा सचिवालय ने 37 पुरुष और 5 महिला अधिकारी, कर्मचारियों के लिए ड्रेस कोड लागू करने का फैसला किया है। सदन में वेल ऑफ द हाउस में बैठने वाले 37 पुरुषों को शर्ट-पैंट और महिलाओं को एक ही तरह की साड़ी, ब्लाउज दिए जाएंगे। इसके साथ ही इन सभी 42 अधिकारी कर्मचारी को समर जैकेट और बंद गले का कोट भी तैयार कराकर दिया जाएगा।

विधानसभा के सदन में वेल ऑफ द हाउस में बैठने वाले अधिकारियों, कर्मचारियों के लिए रेमंड्स की यूनिफॉर्म और साड़ी खरीदने के लिए नियम बनाए हैं। इसमें अधिकारियों और कर्मचारियों के ड्रेस कोड का जो कपड़ा लिया जाएगा और उसकी सिलाई पर जो खर्च आएगा उसका पूरा खर्च विधानसभा उठाएगी।

विधानसभा सचिवालय ने कहा है कि इसके लिए जिस कम्पनी को ठेका दिया जाएगा उसके टेलर कर्मचारियों और अधिकारियों के यूनिफॉर्म की नाप लेने विधानसभा पहुंचकर नाप लेंगे। यूनिफॉर्म की नाप लेने के बाद 21 दिन में यूनिफॉर्म बनाकर देना होगी। ऐसा नहीं किया तो अमानत राशि राजसात की जा सकेगी।

पुस्तक समीक्षा

लोकेन्द्र सिंह
समीक्षक

संस्कार भारती के बहाने हिन्दू कला दृष्टि पर विमर्श

भारतीय कला परंपरा केवल सौंदर्य और मनोरंजन तक सीमित नहीं है, वह जीवन-दर्शन की संवाहिका रही है। चिंतन की राष्ट्रीय धारा के ऋषि तुल्य चिंतक-विचार दत्तोपन्त ठेंगड़ी की पुस्तक 'हिन्दू कला दृष्टि- संस्कार भारती क्यों?' इसी बिंदु को केंद्र में रखकर भारतीय कला की आत्मा, उसकी गहराई और उसकी सामाजिक भूमिका पर विमर्श करती है। यह एक साधारण पुस्तक नहीं, अपितु एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण का घोष है। पुस्तक के लेखन का एक उद्देश्य कला-संस्कृति के क्षेत्र में राष्ट्रीय विचार को लेकर सक्रिय संगठन 'संस्कार भारती' का परिचय कराना भी है। लेखन ने प्रारंभ में ही बताया है कि संस्कार भारती की स्थापना का उद्देश्य क्या रहा है? ठेंगड़ी जी की यह पुस्तक 'संस्कार भारती' के लिए प्रकाश स्तम्भ की भाँति है। प्रस्तावना में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति रहे कमलेशदत्त त्रिपाठी ने उचित ही लिखा है कि दत्तोपन्त ठेंगड़ी जी की यह रचना कला-प्रेमियों और कला-समीक्षकों को तो गंभीर संदेश देती ही है। संस्कार भारती के लिए यह पुस्तक श्री ठेंगड़ी जी का आशीर्वाद है।

लेखक ठेंगड़ी जी ने तीन अध्यायों- अबोधगम्य, दृष्टिकोण और दिशा में कला के संदर्भ में हिन्दू दृष्टि और संस्कार भारती की भूमिका को लेकर चर्चा की है। विमर्श को गंभीर और प्रामाणिक बनाने की दृष्टि से उन्होंने स्थान-स्थान पर उपयुक्त दृष्टांत एवं संदर्भ भी दिए हैं। दरअसल, हम भारतीय अभी तक मानसिक रूप से औपनिवेशिक दासता से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाए हैं। इसलिए हमें अपनी ज्ञान-परंपरा पर तब तक कोई विश्वास और गौरव की अनुभूति नहीं होती, जब तक कि कोई यूरोपीय विद्वान उसकी सराहना न कर दे। 'हिन्दू कला तथा हिन्दू मानस' की चर्चा करते हुए यह पीड़ा श्री ठेंगड़ी जी ने भी व्यक्त की है। वे लिखते हैं- ÷हमारा देश चार दशक से भी पहले स्वाधीन हो गया, किन्तु यहाँ का आधुनिक शिक्षित मानस अब भी पहले की भाँति ही दास भाव से जकड़ा हुआ है। अंग्रेजी रंग में रंगा हिन्दू अब भी यही प्रयास करेगा कि भारत की हर स्थिति को यूरोपीय गज से नापे, भारत की हर समस्या को यूरोपीय दृष्टिकोण से परखे और भारत की हर वस्तु को यूरोपीय चश्मे से देखे। 'हिन्दू' से जुड़ी कोई भी वस्तु तभी महान समझी जा सकती है, जब उसे महानता के बारे में पश्चिमी विशेषज्ञ का प्रमाण-पत्र मिले। विवेकानंद अपने शिकागो भाषण के बाद ही महान बने। रवींद्र-संगीत, संगीत की वैज्ञानिक कोटि में तभी आया जब गुरुदेव को नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। हिन्दू साहित्य की कोई भी कृति तब तक सुंदर नहीं हो सकती, जब तक यूरोपीय देशों में कोई शोपेनहावर उसका गुणगान न करे।

लेखक ने उन विदेशी विद्वानों और उनके विचारों का भी उल्लेख किया है, जो भारतीय कला-संस्कृति के दीवाने हो गए। फ्रांसिस फोक्स, विलियम जोंस, फर्गुसन, एडमंड गिलेस और गेटे से लेकर कई विद्वानों ने भारतीय कला दृष्टि की खूब सराहना की है। श्री ठेंगड़ी ने उन विदेशी विद्वानों को भी आड़े हाथ लिया है, जिन्होंने हिन्दू कला के प्रति अनेकानेक मिथ्या धारणाएं बनायी और फैलाई हैं।

पुस्तक में हिन्दू कला के मूल स्वरूप की व्याख्या की गई है, यहाँ कला एक 'साधना' है और कलाकार एक 'साधक'। लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि भारत की पारंपरिक कलाएं ङ्क जैसे नृत्य, संगीत, मूर्तिकला, वास्तुकला आदि केवल अभिव्यक्ति के माध्यम नहीं, बल्कि आध्यात्मिक अनुशासन का हिस्सा रही हैं। यह कला दृष्टि, पश्चिमी दृष्टिकोण से भिन्न, आत्मा से संवाद की कला है। पुस्तक यह भी स्थापित करती है कि कला जीवन के अन्य विषयों एवं क्षेत्रों से अलग-थलग नहीं है। कला जीवन के विविध आयामों के साथ जुड़ी हुई है। याद रखें कि जहाँ पश्चिम का विचार हर बात को अलग-अलग खानों में रखकर उनके बारे में विचार करता है। वहीं हिन्दू सभी विषयों में एकात्मता देखता है।

श्री दत्तोपन्त ठेंगड़ी ने भूगोल से जोड़कर भी कला को देखने का एक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। वे लिखते हैं कि भूगोल और कला का आपसी संबंध हमारे देश में लगभग अनदेखा-सा ही रह गया है। उत्तर भारत और दक्षिण भारत के संगीत में अंतर को रेखांकित करते हुए

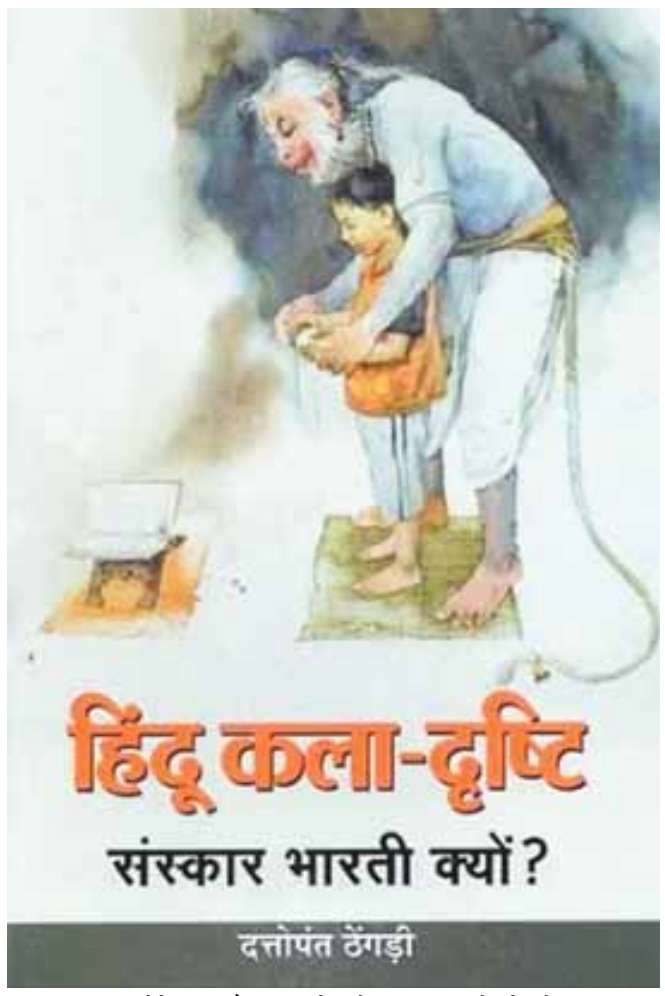

उन्होंने लिखा है- उत्तर को अनेक आक्रमण झेलने पड़े, अतः उसने योद्धा जातियों को जन्म दिया। दक्षिण में जीवन अधिक शांतिपूर्ण था और लोगों के पास खेती-बाड़ी के लिए समय था। उन्हें विदेशियों से मिलने-जुलने के अधिक अवसर नहीं मिले। अतः वे रूढ़िवादी और अलग-थलग रहे। इसकी झलक उनके संगीत में मिलती है, जो रूढ़िवादी तथा शास्त्रीय बना रहा है। राजस्थान, पंजाब और बिहार की भौगोलिक परिस्थितियों का संगीत पर क्या प्रभाव है, इसकी चर्चा भी लेखक ने की है। प्रकृति और संगीत के संबंध को भी उन्होंने देखा है।

संप्रदायों एवं विचार-प्रणालियों का कला पर क्या प्रभाव पड़ा है, इसकी चर्चा भी लेखक ने की है। इस संदर्भ में उन्होंने यहूदी, इस्लाम, ईसाई मत के साथ ही यूरोपीय पुनर्जागरण और कम्युनिज्म के संदर्भ में भी कला का विश्लेषण किया है। इन संप्रदायों एवं विचार-प्रणालियों ने कला को किस प्रकार नुकसान पहुँचाया या उसके विकास को बाधित किया, इसका पर्याप्त विवरण हमें पुस्तक में मिलता है। वे लिखते हैं कि हेब्रू राष्ट्र के जनकों तथा संस्थापकों अब्राहम, इसाक तथा जैकब के पास कलाओं के लिए न तो अवकाश था और न ही कोई सुविधा। बेबीलोनिया की दासता के बाद हमें किसी मूर्ति, चित्र अथवा पच्चीकारी का चिह्न नहीं मिलता। पुजारी केवल नगण्य वास्तुकला और संगीत की अनुमति देते थे। इस्लाम के संबंध में श्री ठेंगड़ी लिखते हैं कि इस्लाम का स्वभाव ललित कलाओं के संवर्धन के अनुकूल नहीं है। उन्होंने विल डूरैंट के विचार का उल्लेख किया है, जिसमें वह कहते हैं- निरख-परख के बावजूद औरंगजेब मुगल तथा भारतीय कला के लिए अभिशाप था।

हिन्दू कला का उल्लेख भारत के प्राचीन ग्रंथों में भी मिलता है। भारतीय संगीत और नृत्य का प्राचीनतम ठोस प्रमाण ऋग्वेद में मिलता है। ऋग्वेद में गोलाकार में नृत्य करनेवाले जोड़ों का उल्लेख है। भरत मुनि का नाट्यशास्त्र तो नृत्य के सभी तत्वों का स्रोत-ग्रंथ है। लेखक ने स्थापित किया है कि यह परंपरा आधुनिक ग्रंथों तक आती है। भारतीय नृत्य की गौरवपूर्ण यात्रा आनंद कुमारस्वामी का ग्रंथ 'दि डांस ऑफ शिव', डॉ. सीपी रामस्वामी अय्यर की पुस्तक 'दि आर्ट ऑफ डांस' और मृणालिनी साराभाई के ग्रंथ 'दि सेक्रेड डांस ऑफ इंडिया' से होकर आगे तक जाती है। भारतीय कला का संवर्धन करनेवाले आधुनिक कला विशारदों का नामोल्लेख भी लेखक ने किया है।

हिन्दू कला दृष्टि पर विमर्श करने के साथ-साथ श्री ठेंगड़ी जी की इस पुस्तक का प्रमुख उद्देश्य यह बताना है कि 'संस्कार भारती' की स्थापना क्यों आवश्यक हुई? लेखक का तर्क है कि स्वतंत्रता के बाद की सांस्कृतिक नीति में भारतीय मूल्यों की उपेक्षा हुई और पश्चिमी प्रभावों के कारण कला का उद्देश्य और स्वरूप विकृत हुआ। ऐसे समय में 'संस्कार भारती' का कार्य एक सांस्कृतिक शुद्धिकरण का प्रयास था। यह संगठन एक ऐसा आंदोलन है, जो कला को पुनः उसके आध्यात्मिक और सामाजिक संदर्भों से जोड़ता है। उन्होंने यह भी बताया है कि 'संस्कार भारती' का दृष्टिकोण केवल मंचों और दीर्घाओं तक सीमित नहीं है, वह जनजीवन की कला है। वह एक ऐसी दृष्टि है, जो ग्रामीण भारत से लेकर नगरों तक, सभी में सांस्कृतिक चेतना का संचार करती है। कला को शिक्षा, संस्कार, और राष्ट्रनिर्माण का उपकरण बनाना ही संस्था का उद्देश्य रहा है। अपने इस उद्देश्य में बहुत हद तक संस्कार भारती सफल भी रही है।

पुस्तक की भाषा संस्कृतनिष्ठ किंतु प्रवाहमयी हिन्दी में है। श्री दत्तोपन्त ठेंगड़ी जी ने जटिल विचारों को भी सरल भाषा में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है, जिससे यह ग्रंथ न केवल शोधकर्ताओं के लिए ही नहीं अपितु सामान्य पाठकों के लिए भी उपयोगी बन गया है। शैली में भावात्मकता के साथ-साथ तर्क की स्पष्टता भी है, जो पाठक को गहराई से सोचने के लिए प्रेरित करती है। कहना होगा कि 'हिन्दू कला दृष्टि- संस्कार भारती क्यों?' एक वैचारिक और सांस्कृतिक दस्तावेज है, जो न केवल भारतीय कला की गरिमा को प्रतिष्ठित करता है, बल्कि आधुनिक समय में उसके पुनर्स्थापन की अनिवार्यता को भी रेखांकित करता है। यह उन सभी पाठकों के लिए अनिवार्य पाठ है, जो भारतीय संस्कृति, कला और विचारधारा को केवल समझना नहीं, जीना भी चाहते हैं। अपनी इस रचना के माध्यम से श्री ठेंगड़ी ने कला-संस्कृति के क्षेत्र में शोध करने वाले समाज विज्ञानियों के सामने शोध की अनेक खिड़कियां खोली हैं। हिन्दू कला दृष्टि के विविध पक्षों को लेकर शोध होते हैं, तब हम न केवल अपने समाज को अपितु विश्व को भी हिन्दू कला के विपुल भंडार तक ले जाने में आवश्यक भूमिका का निर्वहन करेंगे।

पुस्तक- हिन्दू कला दृष्टि- संस्कार भारती क्यों?
लेखक- दत्तोपन्त ठेंगड़ी
मूल्य- 150 (पेपर बैक)
प्रकाशक- प्रभात प्रकाशन, नईदिल्ली

लघुकथा

श्याम कुमार कोलारे

प्रायश्चित

अमृतपुर हरियाली की गोद मे बसा एक खुशहाल गांव जहाँ लालनदास अपने भरा-पूरा परिवार के साथ निवास करता था। गाँव के बीचोबीच एक खपरैल वाला घर, मिट्टी से लिपा-पुता आँगन, चारों ओर हरियाली, चिड़ियों की चहचहाहट और सुबह-शाम की आरती की गूंज में यह घर कभी खुशियों से भरा रहता था। लालनदास और जानकी देवी ने अपनी जिंदगी की हर कठिनाई को मुस्कुराकर सहा, लेकिन कभी किसी के आगे हाथ नहीं फैलाया।

लालनदास मजदूरी करते थे, दिन भर कड़ी धूप में ईंट पत्थर उठाते थे, तो जानकी दूसरों के खेतों में काम करती। तीन बेटियां थीं–सुशीला, गीता और रमा। उन्हें भी माता-पिता ने भरसक पढ़ाया, संस्कार दिए, विदा किया। पर एक बेटा न होने की टीस मन में कहीं बैठी रहती थी। गांव की कहावतें, समाज का ताना–बेटा नहीं है? बुढ़ापे में कौन देखेगा?–सबने धीरे-धीरे दिल को कचोटना शुरू कर दिया।

इसी बीच भगवान ने कृपा की, जानकी फिर से गर्भवती हुई और इस बार घर में एक पुत्र ने जन्म लिया–नाम रखा गया अमित।

घर में जैसे रोशनी लौट आई। तीनों बेटियां भी छोटे भाई को गोद में उठाकर झूला झुलातीं। लालनदास की आंखों में अब भविष्य की एक आस जगने लगी थी–ये हमारा बुढ़ापा संभालेगा।

अमित बचपन से ही तेज था। मां-बाप ने उसे हर हाल में पढ़ाया। अपने पुराने कपड़े सालों पहनता, अपने लिए न खरीदकर बेटा की जरूरतें पूरी करता। अपनी जरूरते को नजरअंदाज कर पैसे बचाता। अपनी गरीबी अपने बेटे पर हावी नही होने दी, अभाव मे रहा लेकिन बेटे को अंग्रेजी मीडियम स्कूल में भेजा। बेटियों के लिए चूड़ी-बिंदी की जगह कॉपी-किताब खरीदी गई। अमित हर परीक्षा में अव्वल आता गया। गांव के लोग कहते–लालन का लड़का तो इंजीनियर, डॉक्टर, कोई बड़ा अधिकारी बनेगा। और हुआ भी ऐसा ही। अमित ने अच्छे नंबरों से पास हुआ और सरकारी मेडिकल कॉलेज में दाखिला लिया।

लालनदास ने बेटी की शादी टाल दी, पर बेटे की फीस भरी। जानकी देवी ने अपना एकमात्र सोने का कंगन बेच दिया–हमारा बेटा अफसर बनेगा।

समय बीतता गया। अमित डॉक्टर बना, शहर के सरकारी अस्पताल में नौकरी लगी। सभी के मन मे खुशी थी। कुछ समय बाद पिता ने बड़े धूमधाम से अमित की शादी एक पढ़ी-लिखी लडक़ी उमा से कराया।

शादी के कुछ दिन घर में सब अच्छा चलता रहा। सब घर मे आई नई सदस्य की बहुत इज्जत करते एवं हर काम में हाथ बटाते। कुछ महीने बाद ही घर का रंग-ढंग बदलने लगा। बहू के चेहरे पर हमेशा शिकन, बात-बात में ताने–इस घर में कुछ भी ढंग का नहीं है मम्मी जी, आप फ्रिज से ठंडा पानी क्यों लेती हैं? मेरी स्किन को सर्दी से एलर्जी है।

कुछ ही समय में बहू ने घर की चीजों पर अपने कब्ज़े की घोषणा कर दी। बर्तन अलग, राशन अलग, यहां तक कि किचन में आने की बंदिश हो गई। बच्चों से साथ खेलना-खाना में रोक टोक होने लगा। एक दिन अमित ने बच्चों के लिए आइसक्रीम लाया। एक दिन बच्चों ने जिद करके अपनी दादी को उनकी आइसक्रीम खाबे को दी, बच्चों की जिद से जानकी जानकी ने आईस्क्रीम खाया। उमा ने सास को बच्चों की आईस्क्रीम खाते देख दो टूक शब्दों में कहा आईस्क्रीम मत खाइए मम्मी जी, बच्चे नहीं हैं आप। बच्चे तो बच्चे है, आपको हमारे घर मे रहना है तो इस घर के नियम को मानना पड़ेगा। कभी इस घर को बिना किसी शर्त के चलाने वाली जानकी अब आने ही घर मे किसी के नियम में चलने को मजबूर थी।

जानकी की आंखों में पानी भर आया। उन्होंने कुछ नहीं कहा, चुपचाप स्टोर रूम में एक पुराना चूल्हा निकाल लिया। उसी कोने में एक छोटी सी रसोई बना ली। लकड़ियों का धुआं अब घर के अंदर नहीं, बुढ़ापे के मन में भरता जा रहा था।

लालनदास कुछ कह नहीं पाते थे। बेटे से बोले–÷बेटा, बहू से कहो हम भी इस घर के सदस्य हैं।

पर अमित टाल गया, पापा, अब आप इन छोटी-छोटी बातों में मत पड़ा करो। आप लोगों को तो आदत है दुख देखने की।

अमित की यह बेरुखी जैसे किसी पहाड़ से टकराने जैसी थी। उस दिन जानकी ने अपने तकिए में मुंह छिपाकर खूब रोई थी।

अब बूढ़े मां-बाप अपने ही घर के कोने में सिमट गए थे। बहू-बेटा एसी कमरे में, बढ़िया खाने में, और मां-बाप एक कोने में टीन के बक्से पर बैठकर खुद पकाते, खुद खाते। जो घर कभी मिलकर बसाया था, आज उसी में दो हिस्से बन चुके थे–एक उजाले वाला, एक अंधेरे वाला।

बेटियां जब कभी आतीं, मां-बाप से लिपटकर रो लेतीं। गीता ने कहा, पापा, हमारे साथ चलो। वहां भी घर है।

पर लालनदास ने कहा, बेटी, जिस घर को जीवन भर सींचा, उसे छोड़ना मौत से भी बड़ा दुख है।

जानकी की तबीयत अब खराब रहने लगी थी। एक रात उन्होंने धीरे से लालनदास से कहा–मैं सोचती हूं, क्या हमारी गलती यही थी कि हमने बेटा चाहा?

लालनदास ने धीरे से सिर झुका दिया।

अगर हम बेटियों को ही सब कुछ मान लेते, तो शायद इतना अपमान न सहना पड़ता

उनकी आंखों में आंसू नहीं थे, एक गहरी चुप्पी थी। जैसे प्रायश्चित का बोझ अब आंसुओं से भी भारी हो चला था।

एक दिन गांव के एक बुजुर्ग ने कहा, लालन, तूने पेड़ को सींचा, लेकिन उसकी छांव तुझ पर न आई। पर मत घबरा, सूरज रोज उगता है। तेरा दुख भी जाएगा।

कुछ समय बाद जानकी देवी चल बसीं। अंतिम समय में उनके होंठों पर बस एक ही वाक्य था–बेटियों को मेरा आशीर्वाद देनाज बेटा तो शायद अब रास्ता भूल गया है।

अंतिम संस्कार में तीनों बेटियां रोती रहीं, बेटा दूर शहर में मीटिंग में व्यस्त था।

आज भी लालनदास अपने स्टोर रूम में अकेले चूल्हा जलाते हैं। दीवार पर जानकी की तस्वीर है, सामने तुलसी का पौधा और मन में एक ही सवाल–

क्या सच में बेटा होना जीवन का सहारा है? या सिर्फ एक सामाजिक धोखा?

यात्रा

मेरे बारे में लिखना बंद करो

सन्नी कुमार बोज़ो

दद्दा क्या खा रहे हो आप? मुझे भी खिलाओगे? बहुत भूख लगी है। सुबह से कुछ नहीं खाया। अभी तो शाम भी होने को है। और यहाँ दूर दूर तक कुछ भी नहीं है÷ अपने सामने एक दद्दा को खाते देख मैंने मन ही मन यही सोचा लेकिन उनसे कुछ कहा नहीं। वो खाने के साथ-साथ राजस्थानी में भक्ति गाने सुन रहे हैं। मुझे नीमच माता मंदिर आते वक़्त अंदाजा नहीं था कि मैं इतना थक जाऊँगा। मैं मंदिर तक आने के रास्ते में दो जगह काफ़ी समय तक रुका और खुद को हौसला दिया। नॉर्मली मंदिर चढ़ने में लोगों को बीस मिनट लगते हैं। लेकिन मैंने दो घंटे लगा दिए।

आज से पहले तक मुझे हमेशा लगता था कि कोई भी फिजिकल काम आसानी से कर सकता हूँ भले ही बहुत टाइम से नहीं किया हो। लेकिन आज इस वक़्त मुझे वो मीम याद आ रहा है जिसमें मेंटल हेल्थ से ज्यादा फिजिकल हेल्थ के ख़राब होने की बात थी। हालांकि अच्छी चीज़ ये है कि मंदिर तक आने में बीच-बीच में शेड बने हुए हैं। मैं शेड देखकर बहुत खुश हो रहा था कि अगर बारिश हुई तो कितनी मददगार होगी। जब बहुत ज्यादा थक गया था तब एक शेड के नीचे बने बेंच पर बैठ गया। इस ऊँचाई पर दूर-दूर तक कोई नहीं था। शेड के नीचे बैठे-बैठे उदयपुर पेड़ों के पीछे से झांकते हुए नज़र आ रहा था।

मंदिर की तरफ़ आने से पहले मैंने सड़क किनारे एक हैण्ड पंप से पानी भर लिया था। शेड में बैठते ज़ोरों की प्यास लगी। बैग से जैसे ही बोतल निकालकर पीने जा रहा था अचानक से रुक गया। बोतल का पानी पीला हो चूका था। कुछ पल के लिए मैं प्यासी नज़रों से पानी के बदलते रंग को देखता रहा। जिस समय उम्मीद भी न हो और रंग बदल जाए तो दिल और उम्मीद चकनाचूर हो जाता है। मैंने बिना पानी पिए ही ढक्कन लगा दिया। थोड़ी देर सुस्ताने के बाद ऊपर से नीचे की तरफ़ आते हुए बच्चों की आवाज़ सुनी। फिर समझ आया कि उन बच्चों के साथ एक और आवाज़ आ रही थी ÷ढेंचू ढेंचू÷

पहाड़ों में आवाज़ दूर भी हो तो पास सुनाई पड़ती है। मुझे लगा वो आवाजें तुरंत ही मेरे सामने से होकर नीचे की तरफ़ चली जायेंगी। लेकिन इन्तिज़ार करते करते 15 मिनट निकल गये। फिर अचानक से आवाज़ तेज हो गयी। लगभग दस पंद्रह गदहें तेजी से नीचे की ओर जा रहे थे। मैंने देखने की कोशिश कि उनकी पीठ पर क्या लदा है। पर कुछ समझ नहीं आया। जब गद्दें मेरे सामने से गुजरे तब तक मैंने अपने मोबाइल से कैमरा निकल लिया था ताकि गदहों के झुण्ड की वीडियो बना सकूं। क्या करना है वीडियो का ऐसा कुछ भी नहीं सोचा था। गद्दें आकर गुज़र गये उसके बाद दो बच्चों में से एक बच्चा जो लगभग 12 या 13 साल का होगा उसने मुझे विडिओ बनाते देख लिया।

मैं विडिओ बनाने के बाद फिर से शेड में वापस लौट गया। उसने आकर मुझसे पूछा आपने मेरी विडिओ बनाई है। जल्दी से डिलीट करो। मेरा विडिओ बनाने की बात सोचना भी मत उसके ऐसा पूछते ही मेरे अंदर बहुत सी बातें चलने लगी। मैंने उसे जवाब दिया मैंने तो गदहों की विडिओ बनाई है। तुम्हारी नहीं बनाई है ये सुनते ही उसने आर्डर करते हुए कहा मैं नहीं जानता जो भी विडिओ है उसे डिलीट कीजिये। आपने मेरी बनाई है। ये सुनकर मैं ठिठक गया। पिछले कुछ समय से फ़ोटो खींचने के मामले में मैंने बहुत सावधानी बरती है। या फोटो लेने के बाद भी अगर किसी दोस्त की फोटो है तो उससे सहमति लेता हूँ कहीं पोस्ट करने से पहले। लेकिन गदहों की विडिओ बनाने के कंसेंट के बारे में मैंने सोचा ही नहीं था पहले।

मैंने उसके सामने ही मोबाइल निकालकर विडिओ डिलीट कर दी। तबतक उससे एक दो साल बड़ा लड़का हम दोनों के पास पहुँच चूका था। तब उस छोटे बच्चे ने राजस्थानी भाषा में बात की। बात से समझ आ रहा थी कि उसने मेरी विडिओ बनाने की बात उसे बताई है। उसने पूरी बात सुनते ही मुझसे कहा डिलीट कीजिये वीडियो ये सुनकर मैंने तुरंत उसे जवाब दिया मैंने कर दिया डिलीट। लेकिन मैंने तुम लोगों की विडिओ नहीं बनाई है÷ उसने सुनने के बाद ठीक है कहकर आगे बढ़ गया। मैंने उनदोनों को जाते हुए देखा और फिर शेड में वापस लौट गया।

शेड मैं जीतनी देर तक रुका उतनी देर में वो अपने गदहों के साथ तीन से चार बार ऊपर मंदिर की तरफ़ गये और नीचे लौटे। मैं जैसे तैसे कर के मंदिर पहुँच पाया। सामने ही सीढियों के पास वाटर कूलर दिखा। तुरंत ही मैंने बोतल में पानी भरी और तुरंत से पी गया। अभी मंदिर के सामने बैठकर उदयपुर का नज़ारा बहुत खुबसूरत लग रहा है। सामने फतेहपुर सागर नाम से एक झील भी है। बहुत से कबूतर आसपास उड़ रहे हैं। फर्श पर गिलहरियाँ खेल रही हैं। जो दद्दा खा रहे थे उन्होंने गाना सुनना बंद करके किसी और दिशा में जा चुके हैं। बगल में कंस्ट्रक्शन चल रहा है। इस कंस्ट्रक्शन के पूरा होने पर किसी और जगह से आसानी से झूले के ज़रिये इस मंदिर पर आ सकेंगे।

इस समय मेरे मन में दो ही इच्छा हो रही है। एक की कुछ खाने को मिल जाए और ये कंस्ट्रक्शन की आवाज़ रुक जाए। लेकिन इस समय दोनों ही मेरे दायरे में नहीं है। इस समय कबूतरों की गुटुर गु के साथ साथ एक दो लोगों के आने की आहट हो रही है।

वो मंदिर की घंटियाँ बजा रहे हैं। इन सभी आवाजों के बीच कुछ जानी पहचानी आवाज़ भी घुल रही है। ढेंचू ढेंचू। और मेरे मन में एक आर्डर सुनाई दे रहा है मेरे बारे में लिखना बंद करो। मेरे बारे में लिखने की सोचना भी मत।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपादन के लिये दांव पेंच

व्यंग्य

दिनेश विजयवर्गीय
लेखक व्यंग्यकार हैं।

मैं तीन दिन से लिखी हुई कहानी को फिर से पढ़कर उसे फाइनल टच दे रहा था। तभी मोबाइल पर अनजान नंबर से फोन आया। मैं उसे अनदेखा कर अपने कार्य में लगा रहा। पांच सात मिनट हुए ही थे कि फिर से घंटी बजी। इस बार झुंझलाता हुआ मोबाइल उठाता 'हेलो !' कहा। उधर से आवाज आई 'सर! में लड्डू बोल रहा हूं।' 'बोलो लड्डू जी क्या कुछ कहना चाह रहे हैं? पर मैं आपसे परिचित नहीं हूं। पहले अपना परिचय देंगें।' सर ! मैं भी लेखक हूं और कहानी लिखता हूं ।आपके नाम से परिचित हूं ,इसलिए एक विशेष उद्देश्य से आपको फोन किया है । एक मेरा परिचित प्रकाशक कहानी संकलन निकल रहा है। उसने उसका उत्तरदायित्व मुझे सौंपा है। उसमें कुछ चर्चित लेखकों की कहानियां प्रकाशित होंगी।

टर्म्स कंडीशन क्या है,क्या कुछ सुविधा मिलेगी प्रकाशक की ओर से ? सर! अब सुविधा वाली बात कहां रही ? आज तो लेखक जैसे तैसे कहीं भी छप जाए वही बड़ी उपलब्धि है। भैया, पहेलियां मत बुझाओ। साफ-साफ बताओ कि प्रकाशक लेखक को क्या कुछ देगा ? सर जी , बात ऐसी है प्रकाशक ने तो स्पष्ट कह दिया कि किसी भी प्रकार की नकद राशि या गिफ्ट ,कहानी प्रकाशन उपरांत लेखक को नहीं दी जाएगी। और नहीं प्रकाशित होने पर किताब की एक प्रति उसे भेजी जाएगी। वह भी आपको पैसों से खरीदनी होगी। मतलब यह हुआ कि लेखक की मान मर्यादा को

तुम और प्रकाशक दोनों हाशिये में धकेल रहे हो। वाह भई ! यह भी खूब रही । लेखक का जूता उसी के सर पर मारना चाह रहे हो। नहीं सर ,आप ऐसा विचार न रखें। आपको अच्छे स्तर के लेखकों साथ प्रकाशित होने का घर पर बैठे ठाले ही अवसर मिल रहा है। आपकी कहानी प्रकाशित होने पर पाठक व लेखक पढ़ेंगे । अच्छा लड्डू! एक बात बताओ ,तुम्हें इससे क्या लाभ होगा ? ऱलाभ तो कुछ नहीं बल्कि प्रकाशक से पुस्तक मुझे भी पैसे देकर ही खरीदनी होगी। अब जरा सोचो , न तुम ना हम , किताब को बिना मूल्य चुकाए खरीद नहीं सकते , तो खाली पीली में आ बैल मुझे मार क्यों ? यह तो प्रकाशक, लेखकों के साथ अन्याय कर रहा है और तुम उसके सहयोगी बने हुए हो।

भाई लड्डू ! छोड़ो यह प्रीत। क्यों कर बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना बना रहे हो? अरे सर ! आपसे क्या छुपाना। प्रकाशक को तो कहानी संकलन निकालना ही है। मैं उसका संपादन करूंगा । अगर मैं मना कर दूंगा तो कोई दूसरा संपादन के लिये तैयार हो जायेगा। सो मैंने सोचा कि यह बहती गंगा में डुबकी लगाने का अच्छा अवसर है।

लड्डू भैया ! मैं तुम्हारे द्वारा आमंत्रित लेखकों की भीड़ का हिस्सा नहीं बनना चाहता। तुम तुम्हारे ,हम हमारे । तुम ही लगाओ बहती गंगा में डुबकी। और इसके साथ ही मैंने मोबाइल बंद कर दिया। मैं उसके प्रकाशक के प्रति समर्पण और संपादन करने की दांव पेंच पेज की कला पर सोचता रहा।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

तमाम जद्दोजहद के बीच बंबई कला विद्यालय की स्थापना

उन्नीसवीं सदी में काफी कुछ बदल रहा था। लोग बदलाव के नाम पर तमाम प्रयास कर रहे थे। हालांकि कुछ बदलाव ही था जिसमें वाकई सुधार की आवश्यकता थी, जो वाकई किसी के हित के लिए हो रहा था, जहां से पिछड़ेपन की बू आ रही थी बाकी तो आज की ही तरह बदलाव से ज्यादा उसी बहाने खुद के रहन-सहन और कद को बढ़ाने यानी प्रयास करने वाले अपने खुद के स्तर में बदलाव चाहते थे। जैसा कि पहले ही जिक्र किया जा चुका है कि भारत में कला विद्यालय खुलने लगे थे। मद्रास और कलकत्ता के बाद अब बंबई कला विद्यालय पर चर्चा की बारी है उसी से पूर्व कुछ बात भी जरूरी है। ब्रिटिश सत्ता जो भारत के तमाम विसंगतियों को सुधारने के बात पर बल दे रही थी वही अपने वहां के मजदूर वर्ग के दयनीय स्थिति सहित और भी कई मुद्दों पर आंख बंद कर लेने में भी माहिर थी। ब्रिटिश ग्रामीण क्षेत्र अपने ही हाल पर थे जबकि शहर तेज रफ्तार से अपनी स्थिति में सुधार कर रहा था। यह वही समय था जब इंग्लैंड में भी तमाम बदलाव की जरूरत थी और वो धीरे-धीरे उसी रास्ते पर आगे बढ़ रहा था। ब्रिटिश शासकों में विस्तारवाद की भूख थी, चालाकी और जरूरत के अनुसार किसी भी स्तर तक उतर जाने की चाह भी फलतः समय के साथ दुनिया भर में उसने अपने साम्राज्य का विस्तार किया और जहां तक हो सका विस्तारित क्षेत्रों में अपने विचारों को समृद्ध बताकर वहां के लोगों पर थोपा। वहां के लोगों में वहीं के लोगों द्वारा हीनभावना के प्रवृत्ति के प्रति उकसाकर उन्हें मानसिक विपन्नता के एक सीमा तक ले जाकर छोड़ने के बाद उनके सामने विकल्प के रूप में अपनी शिक्षा नीति रख दे रहे थे जो श्रेष्ठता के दंभ में नहाए हुए थे। मैकाले के नीति पर भी ध्यान रखना होगा जहां उन्होंने खुद के शिक्षा व्यवस्था को उच्च बाकी भारतीय शिक्षा को तुच्छ समझने और लोगों को समझाने पर भी काम किया, जिसमें मैक्समूलर का भी भरपूर सहयोग रहा जिसका भारतीय विद्यार्थियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। संस्कार एवं संस्कृतियों पर गहरा कुठाराघात हुआ। हीनभावना लोगों में प्रबल होती गई। लोग अपने हर क्रिया पर उनके प्रतिक्रिया का इंतजार करने लगे और उनसे मिले चंद शब्दों को सम्मान मान बैठते रहे। रवि वर्मा को 'पूर्व का राफेल' कहने से आखिर क्या सिद्ध करने की चाहत रही होगी? मैक्समूलर को भारतीय धर्मग्रंथों एवं वेदों का विशद ज्ञाता बताकर अंग्रेज अपने उद्देश्य में सफल होते रहे। जबकि वह था इससे बिल्कुल भिन्न। मैकाले और मैक्समूलर को भारतीय शिक्षा, संस्कार, संस्कृति एवं कला हेतु बहुत अच्छा नहीं माना जा सकता। एकतरफा मानसिकता के साथ किया गया कार्य उनके देशहित तो हो सकता है पर दोनों को खुद के विद्वता पर शंका जरूर होता रहा होगा। उन्हें अपने किए पर खुद ही कभी-कभी अपने ही प्रश्नों से जूझना पड़ता रहा होगा जिसका उत्तर उनके पास नहीं रहता रहा होगा। खैर इन सभी से परे हैवेल नामक एक ऐसी थाती उस समय भी रही है जिन्हें वाकई कला को समर्पित व्यक्ति कहा जा सकता है जो देश, काल और परिस्थितियों से परे जाकर भारतीय विरासत के प्रति छात्रों को हमेशा जागरूक करते रहे। उनका मानना था कि भारतीय विरासत ब्रिटेन की तुलना में कहीं अधिक समृद्ध एवं विशद है, और हर भारतीय को उन पर गर्व करने का पूरा अधिकार है।

भारतीय कला में भाव, विचार, लयता, वर्णिकाभंग सहित और भी विशेषताओं का इतना विशाल सागर है कि वाकई हर भारतीय को उस पर नाज़ हो। वाकई में हम भारतीय अगर अपने थाती को देखें, समझें तो उनके विशेषताओं पर हमें गर्व होगा। अजंता, एलोरा, खजुराहो सहित और भी प्राचीन एवं नूतन गुफाओं मंदिरों के तरफ देखें वहां के कलाकृतियों की तरफ देखें तो समृद्धता पर खुश होने को जी करता है बस शर्त ये है कि अपने भारतीयता के नजरिए से देखें ना कि किसी पाश्चात्य विचारों के लिबास को ओढ़कर। रही बात अंग्रेजों के यहां की धरती पर बहुत अधिक विकास करने का मसलन सड़क, रेल की पटरियां, कृषि को भी औद्योगिक रूप में बदलने हेतु तमाम प्रयोग करने का, तो लोगों को लगता रहा कि कितना विकास हुआ जबकि उस विकास से फायदा किसका है जैसे मुद्दों पर शांति ही रही जबकि सच्चाई यह रही है कि इन सभी चीजों से असली फायदा तो इंग्लैंड का ही रहा। अंग्रेजों ने भारतीय परिस्थितियों का फायदा लेकर व्यापार के जरिए सत्ता तक का सफर किया। किसानों को नकदी फसलें उगाने पर मजबूर किया गया। ये फसलें अंग्रेजी कारखानों हेतु कच्चे माल के रूप में उनके देश भेजी जाती थीं। माल तैयार होने के बाद वापस भारत के बाजारों में ऊंचे दामों पर बिकने हेतु आ जाती थी। कला विद्यालय खुलने के पीछे भी व्यापार ही उद्देश्य था इस बात को झुठलाया नहीं जा सकता। कृषि के बाद विभिन्न प्रकार के वस्त्रों, विभिन्न पदार्थों पर दस्तकारी, लकड़ी और मिट्टी की कारीगरी, सहित तमाम लोक कलाओं पर भी उन सभी की नजर थी और इनसे कैसे फायदा प्राप्त किया जा सकता है इस पर भी वो लोग लगातार काम करते रहे साथ ही ये सारी चीजें यहां से खत्म ना हो जाए इस हेतु भी कला विद्यालय की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। भारत में कारीगरी का क्षेत्र बहुत ही समृद्ध और व्यापार के मामले में भी सम्पन्न था। विश्व में बढ़ते मशीनीकरण से कला एवं शिल्प के नष्ट हो जाने के खतरे से कला के प्रति समर्पित लोग सकते में थे। जॉन रस्किन जो अपने दौर के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर थे,

कला लेखक के साथ ही कलाकारी में भी हाथ आजमाते रहते थे और जिनके विचारों में प्रकृति कला एवं समाज का समन्वय भी दर्शित है, ने तो कला, कौशल युक्त एक गांव की ही स्थापना कर डाली थी। यहां प्रकृति और प्रकृति के प्रति प्रेम था पर सभी अंग्रेजों में इस चीज की कमी थी।

कला विद्यालय के श्रृंखला में मद्रास एवं कलकत्ता के बाद अगला नंबर बंबई के कला विद्यालय का था। 1857 में शुरू हुए इस विद्यालय को स्थापित करने का श्रेय सर जमशेद जी जीजेभॉय को जाता है। शुरू में कला की कक्षाएं तो चलती रहीं पर ग्रिफिथ के समय गजब का परिवर्तन देखने को यहां मिला। 1878 में इसका नाम सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट कर दिया गया और 90 में यह सरकार के अधीन हो गया। जल्दी ही विद्यार्थियों द्वारा अजंता के भित्तिचित्रों की प्रतिलिपियां बनाई जाने लगी इसी बहाने शिक्षक भी भारतीय थाती से लगातार परिचित होते रहे। ग्रिफिथ का इसमें बहुत योगदान रहा। विद्यार्थियों द्वारा ये कार्य पूरे लगन और निष्ठा से किया गया जिसके बाद अजंता का प्रभाव उनके बाद के कृतियों में भी नजर आने लगा था। मिट्टी के बर्तनों, सहित और भी जगह अजंता की कृतियां नजर आने लगी थी लॉकवुड किपलिंग के कार्य भी सराहनीय रहे। विद्यालय के इमारत को डिजाइन करने का श्रेय वास्तुकार जॉर्ज ट्विग मोलेसी को है। कला विद्यालय में निरन्तर विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया जाता रहा पर धीरे-धीरे विद्यार्थियों के कामों में भारतीय तत्वों का समावेश दिखने लगता है। हालांकि एकेडमिक अध्ययन पर ही जोर हर विद्यालय में रहा जो आगे चलकर भी देखने को मिला पर समय के साथ विद्यार्थी जो आगे चलकर स्वतंत्र कलाकार के रूप में कार्य कर रहे थे, अपने कृतियों में बहुत कुछ बदलाव और प्रयोग करते हुए आगे बढ़ रहे थे। इसी समय राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट (1857) भी वजूद में आ चुका था कुछ वर्षों बाद मेयो स्कूल ऑफ आर्ट लाहौर में भी कला विद्यालय खुला समय के साथ ही और भी विद्यालय खुलते गये जिनका जिक्र आगे होगा। (संलग्न चित्र अजंता की कॉपी है जो साभार गूगल से है)।

दृष्टिकोण

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

आदमी कब भ्रम में डाल दे, कह नहीं सकते

मनुष्य के लिए कोई भी निर्णय कोई और नहीं स्वयं उस व्यक्ति द्वारा लिया जाना चाहिए जिस पर वह लागू होता है । हर आदमी सबसे पहले अपने निर्णय को अपने ऊपर लागू करें फिर किसी और से कहें कि इस पर चलना चाहिए। किसी भी निर्णय पर चलने की स्थिति तब बनती है जब उसमें स्वतंत्रता होती है और स्वतंत्र निर्णय का ही वास्तव में अर्थ और महत्व होता है । हर आदमी को इस बात की समझ रखनी होती है कि उसके लिए सबसे अच्छा क्या हो सकता है । कोई दूसरा किसी के लिए भला कोई भी निर्णय कैसे ले सकता । हर निर्णय हमारी गति को प्रस्तुत करते हैं । जब कहीं भी कुछ नया करने के लिए चलता हैं तो वह हमारे निर्णय की ही गति होती है । कोई भी आपको उतना नहीं जानता जितना आप स्वयं को जानते हैं ।

आप जब कोई निर्णय लेते हैं तो उस पर चलते हैं । यहां निर्णय सिद्धांत से व्यवहार की गति को संकेत करता है । आदमी का हर पथ उसके निर्णय का ही पथ होता है। आदमी जो पथ बनाता है वहीं उसकी गति का कारक भी होता है । वह कहां जायेगा ? क्या करेगा ? क्या करना चाहिए ? इन प्रश्नों के रास्ते ही हम एक आदमी के मन में प्रवेश करते हैं । किसी भी मनुष्य के उपर जब हम विचार कर रहे होते हैं तो एक तरह से उसके उपर निर्णय ही ले रहे होते हैं । यह निर्णय बहुत बार व्यक्तिगत होता है तो बहुत बार सामाजिक निर्णय भी होता है । व्यक्तित्व के निर्माण में व्यक्तिगत निर्णय और सामाजिक निर्णय दोनों एक साथ काम करते हैं। सामाजिक निर्णय से मनुष्य को एक मूल्य प्रणाली में जीने का संदेश दिया जाता है। यह निर्णय उसके उपर एक दबाव के रूप में कार्य करता है। वहीं व्यक्तिगत निर्णय उस आदमी के मन को निर्मित करने का काम करते हैं । व्यक्ति को जांचने परखने के लिए अक्सर हम निजी निर्णय से होते हुए एक सामाजिक निर्णय पर पहुंचते हैं । आदमी कहां है? क्या कुछ कर रहा है यह सब उसके आंतरिक मन पर निर्भर करता है । आदमी को अपनी आंतरिक सुचिता पर भरोसा रखना होता है ।

अंदर से जब हम साफ होते हैं तो उपरी रंग रोगन का कोई खास अर्थ नहीं रह जाता । आदमी जो होता है वहीं दिखता है उसे अलग से दिखने के लिए कुछ करने की जरूरत नहीं होती है । साफ सफाई भी तभी हो पाती है जब आंतरिक स्तर पर आप साफ होते हैं । साफ होने के लिए कहीं दूर जाने की जरूरत नहीं होती बल्कि अपने मन को शुद्ध करने की जरूरत होती है । मन की शुद्धता ही सब कुछ होती है । मन की शुद्धता के लिए किसी दिखावे और प्रदर्शन की जरूरत नहीं होती । न ही किसी व्रत की जरूरत होती है । हर तरह के दिखावे से दूर रहते हुए अपने मन को जीना सीखें । जो कोई मन को जीना सीख लेता है उसके लिए कुछ और सीखने जानने के लिए नहीं होता । मन को जी रहा आदमी साधक होता है । उसे अलग से कहीं जाने की जरूरत नहीं होती है । जो इस संसार में जीने के लिए होता है ...वह तरह तरह से संसार की माया को पकड़ने की कोशिश में रहता है । अब माया कहां पकड़ में आती है । माया का तो काम ही चकमा देना है । न जाने कितने ढ़ंग से माया लुभाती है कि हर? कोई उसके जाल में फंस जाता है । संसार को जी लेना ही सब कुछ नहीं होता । पर जितना भी संसार को जीते हैं वह सब अनुभव का ही विस्तार होता है । संसार को मन से जीना पड़ता है । यदि मन से जीते हैं तभी कोई अर्थ बनता है । मन से जीने

के लिए इस संसार को समझना होता है । संसार को जीकर ही आदमी समृद्ध होता है । हम कहां हैं ? क्यों हैं ? यह समझना बहुत कम लोगों को आता है । ज्यादातर लोगों के लिए जिंदगी स्वयं को देखने और अपने सामानधर्मा को दिखाने के लिए होती है । लोग इसलिए नहीं होते कि उन्हें कुछ कहना है । उनके लिए तो संसार बस एक दिखावा की वस्तु हो जाती है। इससे अलग हटकर कुछ वो सोचते ही नहीं । इन लोगों के लिए दुनिया का अर्थ बस दृश्य संसार में होना होता है । जिसमें अन्य भी इन्हीं की तरह पुतला बनाकर जीते हैं । पुतले की जिंदगी उसके स्वयं के लिए नहीं होती है । वह केवल दूसरों को देखने के लिए होती है । उसके होने की , उसकी सत्ता की , उसकी जिंदगी का निर्धारण दूसरे ही करते हैं । एक पुतला है... वह कहां रखा जायेगा, उसका क्या होगा , उसका नाम क्या होगा यह कुछ भी वह स्वयं तय नहीं करेगा । उसकी उपस्थिति होती है पर निर्जीव होती है । उसके होने या दृश्य होने का निर्धारण भी कोई और करता है । पुतले को एक निश्चित समय पर सजाकर रख दिया जाता है । समय के समाप्त होने पर उसे हटा दिया जाता है । अगली बार फिर उसे सजा कर रख दिया जायेगा । यह क्रम पुतले के साथ नित्य चलता रहता है पर आदमी पुतला नहीं है कि उसका प्रयोग पुतले जैसा ही किया जाये । आदमी तो कभी भी कहीं भी जा सकता है । कुछ भी अचानक से नया कर उठेगा । जो हम सोच नहीं सकते उससे बहुत आगे आदमी चला जाता है । आदमी क्या करता है और क्या नहीं करता है यह उसी पर निर्भर करता है। आदमी की इसी स्थिति के कारण कोई उस पर अलग से निर्णय नहीं ले पाता और जो कोई ऐसा सोचता है वह सफल नहीं होता । आदमी के बारे में पहले से कुछ भी निर्णय नहीं लिया जा सकता । आदमी के बारे में लिया गया निर्णय अगले क्षण ही बदल जाये तो कोई आश्चर्य नहीं । आदमी किस क्षण जाग जाये यह कोई नहीं जानता । इसलिए आदमी के साथ वही प्रयोग नहीं करना चाहिए जो प्रयोग आप पुतले के साथ करते रहते हैं । वह कभी भी कमाल कर सकता है । इसीलिए बराबर से यह देखने में आता है कि आदमी के बारे में अक्सर जो हमारे निर्णय होते हैं वे एक समय के बाद गलत हो जाते हैं । ये सारे निर्णय किसी एक बिंदु पर लिए गए होते हैं । जबकि आदमी 360ए डिग्री पर घूमता ही रहता है । वह कभी भी कहीं भी घूम सकता है । यहीं तो आदमी का आदमी होना है । आदमी कहीं से कहीं निकल कर आ जाता है । आप भ्रम में बने रहते हैं । आदमी अक्सर अलग ही दिख जाता है । आदमी को किसी और की नहीं अपने मन की सुनना चाहिए । जब वह किसी और की सुनता है तो उसका कोई भी निर्णय सही नहीं होता न ही उसके आधार पर होता है। फिर उस निर्णय के लिए उस आदमी को ग़लत भी नहीं कहा जा सकता है । जब निर्णय ही किसी और का है तो फिर उसमें जो आदमी है वह आपका चेहरा कैसे बनेगा ? आपके आदमी का कोई चेहरा उसमें दिखाई नहीं देगा ?। यह ग़लत भी नहीं है।

सीरीज के टुकड़े -टुकड़े रिलीज से नाराज़ दर्शक

वेब सीरीज समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक हैं)

किसी भी वेब सीरीज के प्रति दर्शकों की नाराज़गी , विशेष रुप से जब वह नाराज़गी उस सीरीज के सभी एपीसोड एकसाथ रिलीज़ न करने पर हो तो क्या उसे समीक्षा का एक मुद्दा मान समीक्षा के मूल पाठ में शामिल किया जाना चाहिए ? वेबसिरीज़ क्रिमिनल जस्टिस - सिरीज़ फोर के रिलीज़ के साथ ही यह सवाल दर्शकों द्वारा उठाया गया है । सिरीज़ के शुरुआती तीन एपीसोड्स पिछले गुरुवार रिलीज़ किये गये बाकी के पाँच एपीसोड्स आने वाले हर गुरुवार को रिलीज किए जाएंगे । इस पर नेटिजंस(इंटरनेट के ऑनलाइन उपयोगकर्ता) ने फौरी तौर पर सकारात्मक रिव्यूज देते हुए भी खूब खरी खोटी सुनाई है ।

लेखकों और निर्देशकों की टीम ने एक बार फिर यह साबित किया है कि सस्पेंस को कैसे अन्त तक बनाए रखना है। कोर्ट रूम सीन्स में हर बार एक नया मोड़ आता है, जो दर्शकों को कुर्सी से चिपकाए रखता है। कई बार आप कुर्सी से उछल भी पड़ेंगे। हालांकि कुछ जगहों पर कहानी थोड़ी खिंची हुई लगती है, लेकिन क्लाइमेक्स इतना दमदार है कि आप उस छोटी सी खामी को नजरअंदाज कर सकते हैं। इस बार की कहानी सिर्फ एक मर्डर मिस्ट्री नहीं है, बल्कि यह इस बात पर भी प्रकाश डालती है कि मानसिक स्वास्थ्य, पारिवारिक रिश्ते और संचार की कमी किस तरह एक गहरे संकट में बदल सकते हैं। यह शो दिखाता है कि परिवार की देखभाल और समझ कितनी जरूरी है।

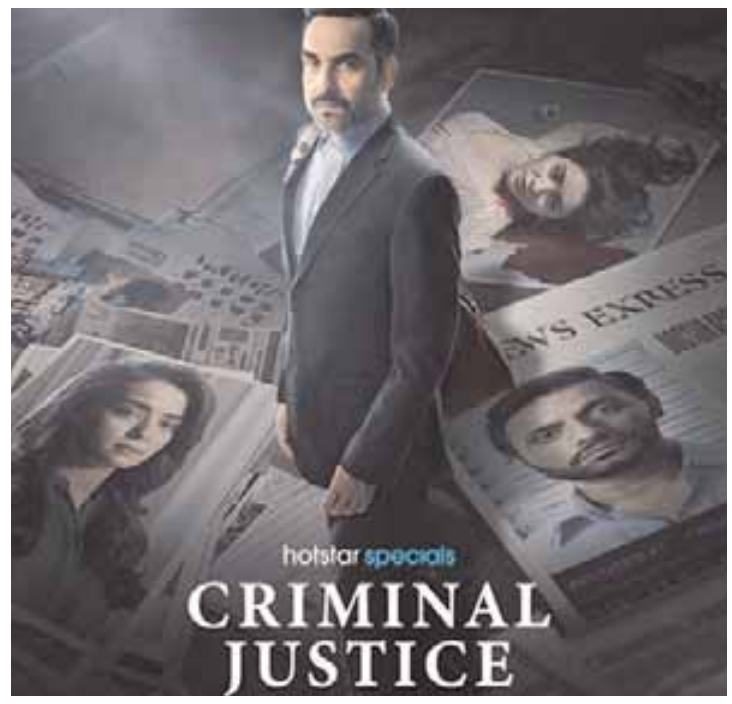

अभिनय की दृष्टि से पूरी सिरीज़ को एक्टर पंकज त्रिपाठी ही अपने कँधों पर ढोते हैं फिर भी रोहन सिप्पी के निर्देशन में बने इस शो में पंकज के साथ जीशान अयूब और सुरवीन चावला जैसे अच्छे अभिनेता भी है । पंकज त्रिपाठी मगर इस बार भी सिरीज की जान हैं, अपने सहज अभिनय से वे फिर यह साबित करते हैं कि माधव मिश्रा की भूमिका उनसे बेहतर कोई नहीं निभा सकता। गंभीर वकील के साथ वो एक फैमिली मैन के रूप में भी दमदार लगे हैं, जिस तरह से वो छिपी हुई परतों को सामने लाते हैं, वो देखना काफी दिलचस्प है। मोहम्मद जीशान अय्यूब एक परेशान पति और पिता के रूप में नजर आए हैं और उनका प्रदर्शन इस बार भी दमदार हैं। वो जब भी स्क्रीन पर आएंगे, आप उन्हें बिना पलकें झपकाए देखना पसंद करेंगे।सुरवीन चावला की भूमिका भी काफी अहम है । केयर टेकर के रोल में नजर आईं आशा नेगी भी कुछ कम नहीं है। उनका किरदार थोड़ा छोटा जरूर है लेकिन उनके काम भी सराहना बनती है। मीता वशिष्ठ और श्वेता बसु प्रसाद का काम भी काफी अच्छा है और उन्होंने कोर्ट रूम ड्रामा को गहराई देने वाले अभिनय से प्रभावित किया है। बरखा सिंह, खुशबू अत्रे और खुशी भारद्वाज ने भी अच्छा काम किया है।

पहले तीनों एपीसोड्स को दर्शको कि सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली है। लोग कहानी की और मुख्य भूमिका में पंकज त्रिपाठी की भी खूब प्रशंसा हो रहि है कहानी लेखक हरमन वडाला, संदीप जैन और समीर मिश्रा ने रोचक कथा और कसी हुई पटकथा की सहायता से अच्छी मनोरंजक सिरीज तैयार की है। लीड रोल में पंकज त्रिपाठी के दमदार अभिनय ने कहानी को बहुत अच्छा बना दिया है। दर्शक सिरीज से काफी जुड़ाव महसूस करते हैं ।

सिरीज़ को ज्यादातर दर्शकों ने कमाल की सिरीज़ बताया है । इस सबके बावजूद इस शो और पंकज त्रिपाठी के प्रशंसक उसके रिलीज़ के तौर-तरीकों से बेहद नाराज हैं । उन्होंने अपनी नाराज़गी और अपने दर्द को सोशल मीडिया पर जतलाना भी शुरू कर दिया है । बकौल? एक दर्शक क्रिमिनल जस्टिस सीजन फोर देखना शुरू किया, मूड एकदम सेट हो चुका था लेकिन सिर्फ तीन एपीसोड के बाद मुझे पता चला कि अभी बस इतना ही । यह क्या मजाक है , यह किस तरह की न्याय व्यवस्था है कि हर गुरुवार सिर्फ एक एपीसोड दिखाया जाएगा , फैंस क्रिमिनल जस्टिस चाहते हैं, एपीसोडिक टॉर्चर नहीं। बकौल? एक दर्शक क्रिमिनल जस्टिस सीजन फोर देखना शुरू किया, मूड एकदम सेट हो चुका था लेकिन सिर्फ तीन एपीसोड के बाद मुझे पता चला कि अभी बस इतना ही । यह क्या मजाक है । यह किस तरह की न्याय व्यवस्था है कि हर गुरुवार सिर्फ एक एपीसोड दिखाया जाएगा। फैंस क्रिमिनल जस्टिस चाहते हैं, एपीसोडिक टॉर्चर नहीं।

सिरीज़ के आठ में से तीन एपीसोड्स के ही रिलीज़ होने से ख़फ़ा दर्शकों के लिये अच्छी खबर यह है कि सिरीज़ का चौथा एपीसोड भी तय समय से पहले रिलीज हो गया है । सिरीज में पंकज त्रिपाठी वकील माधव मिश्रा की मुख्य भूमिका के रूप में वापसी की है। इस सिरीज से उन्होंने अपनी खुद की कम्पनी- माधव मिश्रा एंड एसोसिएशन शुरू की है। इस बार इस सिरीज़ में वह एक महिला की हत्या का मामला सुलझाते हुए नजर आ रहे हैं। रोशिनी (आशा नेगी), एक नर्स जिसका सर्जन डॉ. राज नागपाल (मोहम्मद जीशान अय्यूब) के साथ सम्बन्ध है, की हत्या हो जाती है। नागपाल और उनकी पत्नी अंजू (सुरवीन चावला) को गिरफ्तार कर लिया जाता है। इसके बाद जो नाटकीय मोड़ आते हैं होता है, वही इस सिरीज़ की कहानी का सार है।

क्रिमिनल जस्टिसः ए फैमिली मैटर (यह भी कुछ जगह टाईटल के रुप में लिखा गया है)एक बार फिर साबित करता है कि क्यों यह सीरीज भारत के बेस्ट लीगल ड्रामा में से एक है।

बस नहीं मिलने से निजी साधनों से करना पड़ा यात्रा, कई यात्री वापस लौटे घर

पीएम के कार्यक्रम के लिए बसों का अधिग्रहण, यात्री होते रहे परेशान

संजय द्विवेदी, बैतूल। लोकमाता देवी अहिल्याबाई होलकर की 300वीं जन्म जयंती के अवसर पर भोपाल के जंबूरी मैदान में महिला सशक्तिकरण महासम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी शामिल हुए। इस कार्यक्रम के लिए जिले से 125 बसों और अन्य वाहनों का अधिग्रहण किया गया था, जिससे करीब 5 हजार महिलाएं भोपाल पहुंची। इसके लिए परिवहन विभाग बसों की व्यवस्था की थी। बसों के अधिग्रहण से जिले की सडक़ों पर दौडऩे वाली बसों की कमी बनी रही। जिससे यात्री सुबह से लेकर शाम तक यात्री बसों का इंतजार करते नजर आ रहे थे। बस नहीं मिलने से कई यात्री वापस घर लौट गए, वहीं कई यात्रियों ने निजी साधन से यात्रा की, वहीं कई रूटों पर बसों की व्यवस्था ही नहीं थी। यात्रियों को घंटों अपने रूटों की बसों का इंतजार करके वापस जाना पड़ा। बस स्टैंड पर जो गिनी-चुनी बसे ही थी, वह भी कुछ ही रूटों पर चली। जो यात्री बसें चली, उनमें भी पैर रखने को जगह नहीं थी। हालात यह थे कि बसों के इंतजार में दिनभर यात्री बस स्टैंड पर ही बैठे नजर आए। बसें नहीं मिलने से यात्रियों को गंतव्य तक पहुंचने में भारी परेशानी का सामना करना पड़ा।

बेटी के घर जाने सुबह से बस का इंतजार - जंबाड़ा निवासी मनुबाई देशमुख ने बताया कि बेटी के घर बैतूल आई थी, वापस घर जाने के लिए सुबह 9 बजे से बस स्टैंड पर बस का इंतजार कर रही हूं, लेकिन बस नहीं मिली। हार-थक कर घर वापस लौट गई। इसी तरह बोरदेही, मुलताई, मासोद, आठनेर, पंखा, भैंसदेही, जम्बाड़ा, बैतूल सहित अन्य रूटों पर भी बसों का टोटा बना रहा। यात्री अपने गंतव्य तक जाने के लिए सुबह से बस का इंतजार करते रहे। मुलताई निवासी रवि देशमुख ने बताया कि निजी कार्य से बैतूल आये थे, वापस मुलताई जाना था, लेकिन बस कम होने के कारण उन्हें मुलताई जाने के लिए परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। सुबह से बस स्टैंड पर बसें बहुत कम दिख रही है।

रोजाना दो सौ से अधिक बसों का संचालन- जिला मुख्यालय के कोठी बाजार बस स्टैंड से प्रतिदिन दो सैकड़ा से अधिक बसों का संचालन होता है। यह बसे महानगरों के अलावा भोपाल, इंदौर, सारणी, मुलताई, आठनेर, मासोद, जम्बाड़ा सहित जिले के विभिन्न ब्लाक के गांवों तक पहुंचती है। कई गांव ऐसे भी है, जहां बस के अलावा रेल साधन नहीं है। ऐसे में इन गांवों में रहने वाले यात्रियों को सबसे ज्यादा परेशानी उठानी पड़ी। जो इक्का-दुक्का बसें चल रही थी उनमें सीट पर बैठने के लिए यात्रियों में होड़ लगी रही। इसके बाद भी इन बसों में यात्रियों को सीट नहीं मिल पा रही थी। हालात यह थे कि बसों में पैर रखने को जगह तक नहीं थी। बसों की कमी के कारण सबसे ज्यादा महिलाएं और बच्चे परेशान हुए।

इन ब्लाकों से सबसे ज्यादा महिलाएं पहुंची भोपाल

प्राप्त जानकारी के अनुसार पीएम के कार्यक्रम के लिए 125 बसें अधिग्रहित की गई थी और इस कार्यक्रम में जो महिलाएं शामिल होने भोपाल गई थी, उन सभी महिला हितग्राहियों को भोपाल के लिए बस से रवाना किया गया। इनमें बैतूल ब्लॉक से 1500 महिलाएं, शाहपुर से 2500 महिलाएं, घोड़ाडोंगरी से 1 हजार, शेष महिलाएं मुलताई और आमला ब्लॉक की थी। रात को बैतूल में विश्राम करने के बाद सुबह 4 बजे महिलाओं को कार्यक्रम में शामिल होने के लिए भोपाल रवाना किया गया। इधर भाजपा संगठन ने भी अपने स्तर पर कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अलग-अलग नेताओं को जिम्मेदारी दे रखी थी।

इनका कहना है -

ऊपर से मिले शासन के निर्देशानुसार ही बसों को अधिग्रहित किया गया था, हो सकता है कि इसके चलते कुछ रूटों पर बसों की व्यवस्था नहीं होने से यात्रियों को परेशानी हुई होगी।

- अनुराग शुक्ला, जिला परिवहन अधिकारी, बैतूल

प्रधानमंत्री मोदी को भेंट की गई भरेवा धातु शिल्प से निर्मित पुष्पक कलाकृति

बैतूल की जनजातीय कला को मिला राष्ट्रीय गौरव

बैतूल। लोकमाता देवी अहिल्याबाई होलकर की 300वीं जन्म जयंती के अवसर पर भोपाल के जंबूरी मैदान में आयोजित भव्य महिला सशक्तिकरण महासम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का अभिनंदन मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने बैतूल जिले की भरेवा धातु शिल्प से निर्मित पुष्पक कलाकृति प्रधानमंत्री जी को भेंट की, जो कि प्रदेश की जनजातीय कला परंपरा का जीवंत उदाहरण है। यह गौरवपूर्ण क्षण बैतूल की जनजातीय धरोहर को राष्ट्रीय मंच पर पहचान दिलाने वाला सिद्ध हुआ। यह कला, जिसे ढोकरा शिल्प के नाम से भी जाना जाता है, बैतूल जिले के टिगरिया ग्राम में पीढ़ियों से जीवित है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कुछ दिन पूर्व बैतूल जिले के सारणी स्थित बागडोना में आयोजित स्व-सहायता समूह सम्मेलन में भरेवा आर्ट की प्रदर्शनी का अवलोकन किया था। यहां उन्हें टिगरिया ग्राम के प्रसिद्ध कलाकार श्री बलदेव वाघमारे की पुष्पक कलाकृति विशेष रूप से प्रिय लगी। इसके बाद उन्होंने श्री वाघमारे को भोपाल में 31 मई को आयोजित होने वाले कार्यक्रम में आमंत्रित किया।

क्या है भरेवा आर्ट?- भरेवा धातु शिल्प एक अत्यंत प्राचीन मोम ढलाई तकनीक पर आधारित है। इस प्रक्रिया में मधुमक्खी के छत्ते से प्राप्त मोम से मूर्ति की आकृति बनाकर उस पर मिट्टी की परत चढ़ाई जाती है, फिर उसे अग्नि में तपाया जाता है। इस प्रक्रिया के बाद उस सांचे में पिघली हुई पीतल की धातु डाली जाती है, जिससे अद्वितीय कलाकृति तैयार होती है। यह कला धार्मिक, पौराणिक, लोककथाओं और प्रकृति से जुड़े विषयों को मूर्त रूप देती है।

टिगरिया एक उभरता हुआ क्राफ्ट विलेज- टिगरिया ग्राम को आज क्राफ्ट विलेज के रूप में जाना जाता है, जहां बलदेव वाघमारे एवं उनका परिवार इस विलुप्त होती कला को संजीवनी दे रहे हैं। वे लगभग 200 से अधिक कारीगरों के साथ मिलकर इस परंपरा को नई ऊँचाइयों तक पहुंचा रहे हैं। ग्राम के लगभग 50 परिवार इस कार्य से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं।

वैश्विक पहचान और सम्मान- बलदेव वाघमारे को कालिदास अकादमी सम्मान, विश्वकर्मा पुरस्कार सहित कई प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। उनकी कलाकृतियाँ अमेरिका, फ्रांस समेत कई देशों में प्रदर्शित हो चुकी हैं। जिला प्रशासन बैतूल और मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा भी इस कला के संरक्षण व प्रोत्साहन में निरंतर सहयोग किया जा रहा है।31 मई को आयोजित इस कार्यक्रम में भरेवा आर्ट की प्रदर्शनी मध्यप्रदेश की सांस्कृतिक विरासत के लिए एक ऐतिहासिक अवसर होगा।

रेलवे ट्रैक पर मिला अज्ञात युवक का शव

बैतूल। मुलताई में भोपाल-नागपुर रेल्वे डाउन लाइन पर एक अज्ञात युवक का शव शनिवार की दोपहर 12.30 बजे मिला है। स्टेशन मास्टर ने इसकी सूचना आमला जीआरपी पुलिस को दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर पंचनामा कार्यवाही की। मृतक की उम्र लगभग 35 वर्ष है। युवक ने काला पैंट और सफेद टी-शर्ट पहन रखी थी। उसका रंग सांवला है। शरीर पर कोई स्पष्ट पहचान चिह्न नहीं मिले हैं। शव को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मुलताई की मर्चरी में रखा गया है। जीआरपी के एएसआई दिनेश चंद्र और आरक्षक अनिल मामले की जांच कर रहे हैं। अभी यह स्पष्ट नहीं है कि मौत दुर्घटना से हुई है या यह आत्महत्या या हत्या का मामला है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद मौत के कारणों का पता चलेगा। पुलिस आसपास के थाना क्षेत्रों में सूचना देकर मृतक की पहचान का प्रयास कर रही है। स्थानीय लोगों से भी पूछताछ की जा रही है। पुलिस ने नागरिकों से अपील की है कि अगर किसी का परिजन या परिचित लापता है, तो वे नजदीकी थाने या मुलताई जीआरपी से संपर्क करें।

दिव्यांग बच्ची पानी की टंकी में डूबी, मौत

बैतूल। आठनेर थाना क्षेत्र के ग्राम पांढुर्ना में शनिवार दोपहर को एक 5 वर्षीय दिव्यांग बच्ची की पानी के टंकी में डूब गई। परिजन उसे तुरंत जिला अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस घटना की जांच कर रही है। जानकारी के अनुसार, प्रकाश साहू की बेटी हेतानश्री (5) अपने घर में ही खेल रही थी। इस दौरान दोपहर 12 से 1 बजे के बीच वह खेलते-खेलते घर के पास बने पानी की टंकी में गिर गई। जब बच्ची घर पर नहीं मिली तो परिजनों ने उसे आसपास तलाशा। बाद में परिजनों को बच्ची पानी के टंकी में डूबी मिली। परिजन उसे तुरंत जिला अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पिता प्रकाश साहू ने बताया कि हेतानश्री जन्म से ही दिव्यांग थी। वह सुन और बोल नहीं सकती थी। प्रकाश मजदूरी करते हैं। पुलिस ने शव का पीएम कराकर परिजनों को सौंप दिया। मामले की जांच की जा रही है।

मृत बेटे का शव लेकर युवक पहुंचा मंदिर, प्रतिमाएं खंडित की, ग्रामीणों में आक्रोश

बैतूल। मासोद चौकी क्षेत्र के झालमो इटावा गांव स्थित हनुमान मंदिर में 30 मई की शाम एक युवक ने धार्मिक आस्था को ठेस पहुंचाते हुए मंदिर की प्रतिमाओं की तोडफ़ोड़ कर दी। इस घटना से पूरे गांव में सनसनी का माहौल बन गया है। ग्रामीणों की शिकायत पर मासोद चौकी पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए आरोपी युवक को हिरासत में ले लिया है। जानकारी के अनुसार बलिराम उइके का लगभग तीन से चार वर्ष के पुत्र की मृत्यु हो गई थी। बेटे के निधन के बाद बलिराम 30 मई की शाम को शव लेकर सीधे गांव के हनुमान मंदिर पहुंचा और वहां जमकर उत्पात मचाया। मंदिर में मौजूद प्रतिमाओं को तोडक़र कर खंडित कर दिया। ग्रामीणों ने तुरंत डायल 100 पर सूचना दी। सूचना मिलने पर मासोद चौकी पुलिस मौके पर पहुंची और बलिराम को हिरासत में लेकर चौकी ले गई। ग्रामीणों ने बताया कि बलिराम उइके पहले से ही मानसिक रूप से अस्थिर प्रतीत होता है और अक्सर उल्टे-सीधे काम करता रहा है। लेकिन इस बार उसने हद पार करते हुए मृत बच्चे का शव मंदिर में रखकर तोडफ़ोड़ की जिससे पूरे गांव की धार्मिक भावनाएं आहत हुई हैं।

मां नर्मदा को चुनरी अर्पित करके श्री शिव महाशक्ति महायज्ञ का समापन

सुबह सवेरे सोहागपुर। मां नर्मदा को चुनरी अर्पित करके श्री शिव महाशक्ति महायज्ञ का समापन पूज्य गृहस्थ संत पंडित मनमोहन मुद्गल महाराज की प्रेरणा एवं पूज्य गृहस्थ साधक पंडित प्रकाश मनमोहन मुद्गल के सानिध्य में संपन्न हुआ। इस महायज्ञ में रूद्राभिषेक, रासलीला के अलावा प्रवचनों का आनंद माखननगर ब्लाक एवं सोहागपुर ब्लाक के ग्रामीण महिलाओं, बच्चों एवं श्रद्धालु नागरिकों ने बढ़ चढ़कर उपस्थित दर्ज कराई। उल्लेखनीय है कि उक्त आयोजन माखननगर के सांगाखेड़ा खुर्द के श्री शंभू भक्त मंडल के ग्रामीणों ने कराया था। ज्ञातव्य है कि सोहागपुर के श्री शंभू दरबार पलाश परिसर का यह 28 वां महायज्ञ है। महाआरती के भव्य आयोजन में ऐसा प्रतीत हुआ कि ब्रह्मलीन संत पंडित मनमोहन मुद्गल उपस्थित हुए हैं।इस महाआरती में महिलाएं, युवक, नागरिक आनंद से झूम उठे। समापन समारोह के उपरांत महायज्ञ स्थल के समीप भंडारे का आयोजन किया गया। जिसकी प्रसादी नागरिकों ने ग्रहण की। महायज्ञ के आयोजन में नित्य प्रति ब्रह्मलीन पंडित मनमोहन मुद्गल के नियमित देश भर के शिष्यों परिवारों सहित कई संतों एवं जनप्रतिनिधियों का आगमन होता रहा। महायज्ञ समापन पूज्य गुरुदेव पंडित प्रकाश मनमोहन से भक्तों ने उनका अभिनंदन करके आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर ग्रामीणों ने भविष्य में सभी धार्मिक आयोजनों में उपस्थित होकर धर्म लाभ उठाने का संकल्प लिया।

हल्दी घाटी में समर लड़यो की गूंज के साथ राजपुताना अंदाज में निकला चल समारोह

धार। धार जिला राजपूत समाज के तत्वाधान में वीर शिरोमणि राष्ट्र गौरव महाराणा प्रताप की 485 वी जयंती व 43 वां राजपूत सम्मेलन बड़े धूमधाम से एवं हर्षोल्लास से राजपूत धर्मशाला धार में मनाया गया ।

कार्यक्रम के प्रारंभ में महाराणा प्रताप एवं राणा बख्तावर सिंह जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया तत्पश्चात एक विशाल चल समारोह नगर के विभिन्न मार्गो से होता हुआ राजपूत धर्मशाला पहुंचा । चल समारोह में अश्व पर बैठे राजपूती वेशभूषा में केसरिया पत्ता का हाथ में लिए नन्हे बालक आकर्षण का केंद्र थे । महाराणा प्रताप के चित्र के साथ ध्वजा आकर्षक लग रही थी। केसरिया ध्वज के साथ ही तिरंगा इस बात का प्रतीक था कि महाराणा प्रताप जीवन भर राष्ट्र के स्वाभिमान के लिए लड़े ।

वर्तमान समय में जो भारतीय सेना ने देश के स्वाभिमान के लिए कर दिखाया उस सैन्य शक्ति को नमन और और उस प्रत्येक भारतीय सैनिक के साथ समाज का हर व्यक्ति नत मस्तक है। चल समारोह का का शहर में विभिन्न मंचों से भव्य स्वागत किया गया । चल समारोह में निर्भय सिंह बक्साना जिला अध्यक्ष राजपूत समाज , वरिष्ठ समाजसेवी श्री समंदर सिंह पटेल, नगर अध्यक्ष श्री मोहन सिंह परिहार, कल्याण सिंह पटेल, राजेंद्र सिंह चौहान विजय

सिंह राठौर रमेश सिंह सिसोदिया नवीन सिंह चौहान,धर्मेंद्र सिंह जवरा , निर्भय सिंह पटेल बद्री सिंह पटेल ,दिलीप सिंह पटेल ,विजय सिंह चौहान ,मलखान सिंह मोरी बलराम सिंह चौहान ,अमृत सिंह राठौर ,विनोद सिंह ठाकुर,,घनश्याम सिंह निकम , हेमसिंह पटेल आशीष परिहार ,विजय सिंह शेखावत, भारत सिंह पटेल , कमलेश्वर सिंह सिसोदिया, कुलदीप सिंह तवर , घनश्याम सिंह सिसोदिया आदि उपस्थित थे। समारोह के पश्चात धर्मशाला में मुख्य कार्यक्रम का शुभारंभ शक्ति स्वरूपा मां अंबे के पूजन एवं दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। तपश्चात महाराणा प्रताप के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर राष्ट्र के लिए उनके त्याग, समर्पण को याद किया गया जो वर्तमान परिदृश्य में जीवंत हो रहा है कि राष्ट्र धर्म सर्वोपरि है।

सिंचाई विभाग में 3 साल बाद हुई स्थाई रहने वाले कार्यपालन यंत्री की पोस्टिंग

क्षेत्र के लिए वरदान बनेगी नई सिंचाई परियोजनाएं

बैतूल/मुलताई। बैतूल और मुलताई जिले के दो प्रमुख सिंचाई डिवीजन में कार्यपालन यंत्री का प्रभार संभाल रहे एसडीओ विपिन वामनकर को मुलताई डिवीजन से हटाकर उनके स्थान पर मुलताई सिंचाई डिवीजन में पदस्थ सीएल मरकाम को कार्यपालन यंत्री बनाया गया है। बीते तीन वर्षों से मुलताई में स्थाई रूप से मुख्यालय पर रहकर कार्य करने वाले कार्यपालन यंत्री ना होने के कारण मुलताई क्षेत्र की अनेक महत्वाकांक्षी सिंचाई परियोजना अधर में लटकी हुई थी। पारसडोह, वर्धा जैसी महत्वपूर्ण सिंचाई परियोजना अधर में लटकी हुई थी और अधिकारी समय सीमा में कार्य पूर्ण कराने के बजाय अलग-अलग तर्क देकर ठेकेदार की समय सीमा बडा रहे थे, जिसका लाभ ठेकेदारों को तो मिल रहा था किंतु सफर क्षेत्र की जनता कर रही थी। अब सीएल मरकाम की नियुक्ति के बाद यह माना जा रहा है कि क्षेत्र में चल रही सिंचाई परियोजनाएं समय पर पूर्ण होगी और प्रस्तावित सिंचाई परियोजनाओं को गति मिल सकेगी।

विधायक के प्रयासों से हुई नई परियोजनाओं की मंजूरी एवं कार्यपालन यंत्री की पोस्टिंग

सिंचाई डिवीजन जिसके अंतर्गत मुलताई, आमला, आठनेर, प्रभात पट्टन चार सब डिवीजन आते हैं । किंतु इतने महत्वपूर्ण डिवीजन में तीन वर्षों तक कार्यपालन यंत्री की पोस्टिंग नहीं हो पाई थी जिसकी मांग लंबे समय से स्थानीय विधायक चंद्रशेखर देशमुख से की जा रही थी। विधायक देशमुख को सिंचाई क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए जाना जाता है। उन्होंने अनेक सिंचाई परियोजनाओं को हाल ही में मंजूरी दिलाई है यह सभी योजनाएं परवान चढ़ सके, इसके लिए विधायक चंद्रशेखर देशमुख ने सिंचाई मंत्री से भेंट कर उन्हे स्थिति से अवगत कराया और जहां नई सिंचाई परियोजनाओं को स्वीकृति मिली वहीं परमानेंट कार्यपालन यंत्री की समस्या का भी समाधान हुआ।

जाने क्या है सिंचाई परियोजनाओं की स्थिति

मुलताई क्षेत्र में सिंचाई परियोजनाओं की बात करें तो 8 साल पूर्व प्रारंभ की गई मध्यम सिंचाई परियोजना वर्धा एवं पारसडोह बांध है, यह परियोजनाएं तीन से चार वर्ष में पूर्ण होकर इसका लाभ क्षेत्र को मिल जाना था जो अब तक पूर्ण नहीं हुई है। इसके अलावा 5 लघु सिंचाई परियोजना बिछुआ, गागई, चकोरा, खेडी रामोसी और रीधोरा सीरकुंड का कार्य प्रगति पर है। इसके अलावा जिन लघु सिंचाई परियोजनाओं को साध्यता स्वीकृति, तकनीकी स्वीकृति प्राप्त होकर प्रशासनिक स्वीकृति प्राप्त होना शेष है उनमें परेगांव, जामगांव, जाम, भैंसदंड, राखी ढाना शामिल है। हाल ही में विधायक चंद्रशेखर देशमुख के प्रयासों से बकदर बराई, बिछुआ, लामनडोह पाथाखेड़ा, डुमरीडोल नागढाना ,खोदरी ढाना खाल्हा सोनेगांव लघु सिंचाई परियोजना बांध शामिल है, को साध्यता का स्वीकृति मिली है जिनका सर्वे कार्य पूर्ण करके इन्हें तकनीकी स्वीकृति के लिए भेजा जाएगा।

सिंचित हरियाली से हरा भरा होगा संपूर्ण क्षेत्र : सीएल मरकाम

कार्यपालन यंत्री सीए मरकाम ने बताया कि उनका उद्देश्य क्षेत्र के हर किसान के खेत में पानी पहुंचाना होगा ताकि क्षेत्र के चारों ओर संचित हरियाली दिखाई दे और किसान समृद्ध हो सके। उन्होंने कहा कि वर्धा एवं पारसडोह बांध शीघ्र अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सके इसके प्रयास किए जाएंगे और इससे संबंधित प्राप्त शिकायतों का निराकरण किया जाएगा। विधायक चंद्रशेखर देशमुख के प्रयासों से नई सिंचाई परियोजनाओं को स्वीकृति प्राप्त हो रही है यह सिंचाई परियोजनाएं क्षेत्र के लिए वरदान साबित होगी क्षेत्र में जो लघु सिंचाई परियोजना प्रारंभ है उनका कार्य सितंबर माह तक पूर्ण कर लिया जाएगा। इसके अलावा प्रशासनिक स्वीकृति के लिए भेजे गए बांधों को शीघ्र स्वीकृति प्राप्त हो एवं टेंडर प्रक्रिया पूर्ण हो इसके प्रयास किए जाएंगे। साध्यता के लिए जो नए बांधों की स्वीकृति आई है उनके शीघ्र सर्वे कार्य पूर्ण कर तकनीकी स्वीकृति के लिए भेजा जाएगा।

शिक्षाविद् डॉ दीपिका हासीजा देवी अहिल्या नारी गौरव अलंकरण समारोह 2025 से सम्मानित

सुबह सवेरे संवाददाता। शिक्षाविद् डॉ दीपिका हासीजा को शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए एक गरिमामय समारोह में देवी अहिल्या नारी गौरव अलंकरण समारोह 2025 से सम्मानित किया गया।

यत्र पूज्यंते नार्यस्यू रमंते तत्र देवता के आधार वाक्य पर लोक माता देवी अहिल्या के त्री शताब्दी जन्मोत्सव के पुनीत अवसर पर देवी अहिल्या नारी गौरव अलंकरण समारोह 2025 का आयोजन जाल सभागृह में सत्कार कला केंद्र , इंदौर द्वारा किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि- डॉ मनीषा कोठेकर , नागपुर , विशेष अतिथि-डॉ सोनल सिसोदिया , प्राचार्य बिजनेस मैनेजमेंट , डेली कालेज , इंदौर , अध्यक्षता - डॉ सरिता राव , विश्व प्रख्यात हृदय रोग विशेषज्ञ थे। अपने अपने क्षेत्र की करीब 25 अनुभवी महिलाओं में शिक्षाविद् डॉ दीपिका हासीजा , प्राचार्य किंडर बड्स स्कूल को उनकी 20 से अधिक वर्षों के सतत शैक्षणिक अध्यापन , समाज सेवा. वर्षों से जोली फोनिक्स शिक्षा एवम् अन्य कार्यों हेतु सम्मान दिया गया। उन्होंने इसका श्रेय परम पिता परमेश्वर , अपने माता पिता , सास ससुर , पति डॉ धीरज हासीजा , अपने बच्चो , परिवार , रिश्तेदार , मित्रो को दिया।

बड़े धोखे का बड़ा गेम 20 सितारे करेंगे आपस में फरेब

प्राइम वीडियो ने अपने आने वाले अनस्क्रिप्टेड ओरिजिनल शो 'द ट्रेटर्स' का ट्रेलर लॉन्च किया। इस रियलिटी सीरीज के इंडियन एडेप्टेशन को करण जौहर होस्ट कर रहे हैं। यह शो 12 जून से प्राइम वीडियो पर स्ट्रीम होगा और हर गुरुवार रात 8 बजे इसका नया एपिसोड आएगा, जो सेलिब्रिटी को ग्रैंड फिनाले की ओर ले जाएगा। इस गेम में गद्दारी, धोखे और माइंड गेम्स का जबरदस्त पावर प्ले देखने को मिलेगा। गद्दारों का मकसद मासूम खिलाड़ियों को एक-एक कर गेम से बाहर करना है।

धोखे और चालबाजियों से भरपूर इस रियलिटी सीरीज के पहले सीजन में 20 सेलिब्रिटीज़ हिस्सा ले रहे हैं। इनमें अंशुला कपूर, अपूर्वा, आशीष विद्यार्थी, एलनाज़ नौरोजी, हर्ष गुजराल, जन्नत जुबैर, जान्वी गौर, जैस्मिन भसीन, करण कुंद्रा, लक्ष्मी मांचू, महीप कपूर, मुकेश छाबड़ा, निकिता लूथर, पुरव झा, रफ़्तार, राज कुंद्रा, साहिल सलाथिया, सुधांशु पांडे, सूफी मोतीवाला और उर्फी जावेद शामिल हैं। सभी एक-दूसरे को चकमा देने वाले इस गेम में अपनी अक्ल और इरादों की असली परीक्षा देंगे।

ट्रेलर में 20 कंटेस्टेंट्स राजस्थान के रॉयल सूर्यगढ़ पैलेस पहुंचते दिखाई देंगे। जहां उनका एक ही मकसद होगा, टाइटल जीतना और मिशनों के ज़रिए जमा हुई बड़ी इनामी रकम हासिल करना। शो की शुरुआत में होस्ट करण जौहर कुछ खिलाड़ियों को गुपचुप तरीके से 'गद्दार' चुनते हैं। बाकियों को 'मासूम' माना जाता है और उन्हें इन गद्दारों को पहचानकर गेम से बाहर करना होता है। इस गेम में गद्दारी, धोखे और माइंड गेम्स का जबरदस्त पावर प्ले देखने को मिलेगा। गद्दारों का मकसद मासूम खिलाड़ियों को एक-एक कर गेम से बाहर करना है। लेकिन, अगर मासूम वक्त रहते उन्हें पहचान लें, तो खेल पलट सकता है! ट्रेलर में जहां एक तरफ दमदार दावे और झगड़े हैं, वहीं दूसरी तरफ सीक्रेट प्लानिंग, चौंकाने वाले इल्ज़ाम और इमोशनल ब्रेकडाउन भी दिखते हैं। जो साफ इशारा करते हैं कि 'द ट्रेटर्स' में ड्रामा और ट्विस्ट्स की कोई कमी नहीं होने वाली।

प्राइम वीडियो इंडिया के हेड ऑफ़ ओरिजिनल्स निखिल माधोक ने कहा कि प्राइम वीडियो पर हम हमेशा कुछ नया और अलग पेश करने की कोशिश करते हैं, खासतौर पर हमारे अनस्क्रिप्टेड कंटेंट में। उन्होंने आगे कहा कि 'द ट्रेटर्स' के साथ हम एक ऐसे फॉर्मेट में उतर रहे हैं जैसा भारत ने पहले कभी नहीं देखा। ट्रेलर तो सिर्फ एक झलक है उस एड्रेनालिन-भरे, थ्रिलिंग और अनप्रिडिक्टेबल शो की, जो रियलिटी एंटरटेनमेंट को एक नए लेवल पर ले जाएगा। ये विश्वास और धोखे की सबसे बड़ी परीक्षा है, जहां खिलाड़ी हर वक्त शक और साजिश के माहौल में खेलते हैं और उनका दिमाग ही उनका सबसे बड़ा हथियार होता है।

इंडियन एडेप्टेशन में देसी रंग भी मिलेगा, लेकिन शो की ग्लोबल अपील भी बरकरार रहेगी। हमें ऑल 3 मीडिया इंटरनेशनल और बीबीसी स्टूडियो इंडिया प्रोडक्शन के साथ इस शानदार प्रोजेक्ट पर काम करने की खुशी है। होस्ट करण जौहर ने कहा कि झूठ, धोखा, साज़िश और ढेर सारा ड्रामा-द ट्रेटर्स एक ऐसा शो है, जिसे मिस नहीं किया जा सकता! यहां मुझे पूरा मज़ा आ रहा है। क्योंकि, मैं सिर्फ गेम को चलाता नहीं, बल्कि 20 खिलाड़ियों के बीच होने वाले हर एक झगड़े, प्लॉट और हंगामे का सबसे करीब से गवाह भी बनता हूं। ड्रामा बहुत रियल हो जाता है और दांव बहुत ऊंचे. खिलाड़ी जितनी भी प्लानिंग करके महल में आते हैं। सब कुछ पलट जाता है, जब मैं उनमें से कुछ को 'ट्रेटर्स' चुनता हूं। तो तैयार हो जाइए, क्योंकि अब शुरू होगा असली धोखे का खेल! 12 जून से प्राइम वीडियो पर 'द ट्रेटर्स' जहां हर मोड़ पर मिलेगा नया ट्विस्ट, ऐसे झूठ जो सच लगेंगे, और ऐसे पल जो दर्शकों की सांस रोक देंगे।

'दृश्यम 3' को लेकर अजय से टकराएंगे मोहनलाल

जब इसी साल अप्रैल में मोहनलाल ने अपनी सुपरहिट क्राइम सस्पेंस थ्रिलर 'दृश्यम' फ्रेंचाइजी के तीसरे पार्ट यानी 'दृश्यम 3' का ऐलान किया, तो अजय देवगन के लिए इसे तगड़ा झटका माना जा रहा था। इसलिए क्योंकि मोहनलाल ने मलयालम में बन रही अपनी ओरिजनल 'दृश्यम 3' को हिंदी समेत पैन इंडिया रिलीज करने का फैसला किया। वहीं, अजय देवगन भी साल 2022 में 'दृश्यम 2' की रिलीज के साथ ही 'दृश्यम 3' का ऐलान कर चुके थे। ऐसे में यह अजय देवगन के लिए टेंशन वाली बात थी। क्योंकि, जब ओरिजनल 'दृश्यम 3' ही हिंदी में रिलीज होगी, तो फिर एक और 'दृश्यम 3' को भला हिंदी में कौन देखेगा? इस कारण अजय देवगन की 'दृश्यम 3' पर खतरों के बादल मंडराने लगे थे। पर अब अजय देवगन की 'दृश्यम 3' भी कन्फर्म हो गई है, और वह इसमें लीड रोल में नजर आएंगे।

पैनोरमा स्टूडियो इंटरनेशनल लिमिटेड ने 'दृश्यम 3' के लिए डिजिटल 18 मीडिया प्राइवेट लिमिटेड के साथ हाथ मिलाया है। 29 मई, 2025 को बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज में सेबी की लिस्टिंग ऑब्लिगेशन और डिस्क्लोजर रिक्वायरमेंट के विनियमन 30 के तहत दायर एक औपचारिक घोषणा में, पैनोरमा स्टूडियो ने पुष्टि की कि फिल्म 'दृश्यम 3' प्रोडक्शन में है।

रियल बॉक्स

पचास साल बाद भी 'दीवार' बरक़रार!

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

फिल्मों के मुरीद किसी भी दर्शक से उसकी पसंदीदा फिल्मों के नाम पूछे जाएं, तो उसमें एक नाम 'दीवार' का जरूर होगा। इस फिल्म के डायलॉग कुछ ऐसे थे, जो आज भी लोगों को याद है। ये ऐसी फिल्म थी, जिसने न सिर्फ अमिताभ बच्चन को एंग्री यंगमैन के किरदार में पहचान दिलाई, बल्कि इस छवि को ज्यादा दमदारी से आगे बढ़ाया। कई मामलों में ये एक ट्रेंड सेटर फिल्म थी। यह फिल्म गुस्सैल, नास्तिक, ज़िद्दी और माँ के प्रति समर्पित ऐसे नायक की फिल्म थी, जिसमें हर कलाकार ने अपने करियर की यादगार भूमिका निभाई। 'दीवार' हिंदी सिनेमा की उन चुनिंदा फिल्मों में है, जो 50 साल बाद भी भुलाई नहीं जा सकी। कहा जाता है कि अमिताभ का विजय वर्मा का किरदार उस दौर के मुंबई के माफिया सरगना हाजी मस्तान के जीवन का नाटकीय रूपांतरण था। जबकि, इस फिल्म को 'गंगा जमुना' और 'मदर इंडिया' से प्रभावित भी बताया जाता है।

यश चोपड़ा निर्देशित इस फिल्म ने 'शोले' के बाद सलीम-जावेद को लोकप्रिय फिल्म लेखक बना दिया था। 'जंजीर' ने जिस अमिताभ को एंग्री यंगमैन की पहचान दी 'दीवार' उसकी अगली कड़ी थी। इसके बाद ये नायक की ऐसी पहचान बन गई, जिसे अमिताभ ने तीन दशक तक भुनाया। अमिताभ बच्चन के विद्रोही नायक की भूमिका को 70 और 80 के दशक में सलीम-जावेद ने ही गढ़ा। इस लेखक जोड़ी की ज्यादातर फिल्मों का नायक समाज के तय कायदों को नहीं मानता और अपने पिता के ख़िलाफ़ विद्रोही तेवर अपनाने वाला नज़र आता है। लेकिन, 'दीवार' के नायक के साथ उन्होंने इसका एक मार्मिक पहलू भी जोड़ा। फिल्म के नायक विजय की बांह पर लिखा होता है 'मेरा बाप चोर है।' अमिताभ 'दीवार' में पिता के प्रति गुस्से से भरे दिखाई देते हैं। लेकिन, यहां सांत्वना के बोल उनके पिता को भी मिलते हैं, यह भूमिका एक मिल में मजदूर यूनियन के नेता की है, जिन्हें मालिकों ने षड्यंत्र से चोर बेईमान साबित कर दिया था। इस लेखक जोड़ी की ज्यादातर फिल्मों में नायक का पिता से विद्रोह नजर आया। काफी कुछ 'त्रिशूल' की तरह, लेकिन 'दीवार' में नायक के साथ उन्होंने माँ से रिश्ते का एक मार्मिक पहलू भी जोड़ा था।

जिस दौर में 'दीवार' आई थी, तब भारतीय समाज बदलाव की स्थिति में था। रहन-सहन, सोच, सामाजिक परिवेश के साथ युवा महत्वाकांक्षा भी कुंचाल भर रही थी। आजादी के बाद की दूसरी पीढ़ी बड़ी हो गई थी और बदलाव के इस समय में युवाओं में एक आक्रोश पनप रहा था। इसका सबसे बड़ा चेहरा बनी अमिताभ की दो फ़िल्में। पहली थी 'जंजीर' जिसमें उसकी आँखों के सामने पिता की हत्या हो जाती है। यही गुस्सा उसके जहन में उबलता रहता है। फिल्म में अमिताभ एक पुलिस अधिकारी थे, जो सिस्टम का शिकार होता था। इसी श्रृंखला की दूसरी फिल्म बनी 'दीवार' जिसने पूरे सिस्टम ठेंगा बताया। महानगरों में गुंडागर्दी और उसकी आड़ में तस्करी का धंधा पनप रहा था। इसी आक्रोश का चेहरा बने अमिताभ बच्चन। फिल्म का बेहद सशक्त सीन था अमिताभ बच्चन की बाँह पर 'मेरा बाप चोर है' लिखना।

'दीवार' में दो विपरीत सोच वाले बेटों को पालने के साथ नैतिक मूल्यों पर खरी उतरी मां की सशक्त भूमिका निरूपा रॉय ने निभाई। क्लाइमेक्स में उनकी छवि 'मदर इंडिया' की नरगिस वाली भूमिका से मेल खाती लगती है। एक लड़की के साथ ज़ोर ज़बरदस्ती करने पर वह बेटे को गोली मार देती है। 'दीवार' में ऐसे कई सीन थे,

जिन्होंने 1975 के समय काल के हिसाब से दर्शकों को झकझोर दिया था। बचपन से अमिताभ बच्चन का अपनी मां के साथ मंदिर नहीं जाना। जब मां मंदिर जाती है, तो वे बाहर बैठे होते हैं। वह बच्चा बताता है कि वह भगवान को नहीं मानता और जो भी करेगा अपने दम पर करेगा। आज के दौर में किसी फिल्म में ऐसे दृश्य रखने का सोचा भी नहीं जा सकता। लेकिन, पांच दशक पहले ऐसे ही दृश्यों ने फिल्म के कथानक को दमदार बनाया।

फिल्म में ऐसे कई ऐसे दृश्य थे, जो अपने समय काल से काफी आगे थे। यही कारण है कि 50 साल बाद भी वे प्रासंगिकता लिए हैं। 24 जनवरी 1975 में जब ये फिल्म रिलीज हुई, तब ऐसा सोच भी नहीं गया था। अमिताभ बच्चन का घोर नास्तिक होना। माँ के साथ बचपन से मंदिर के अंदर नहीं जाना और बाहर खड़े रहना। छोटेपन में ही यह कहना कि वो भगवान को नहीं मानता, वो जो भी करेगा अपने दम पर करेगा। यह लड़का पॉलिश करके पैसा कमाता है, लेकिन पॉलिश कराने वाले एक सेठ के पैसे फेंक कर देने पर उससे कहता है 'मैं फेंके हुए पैसे नहीं उठाता।' पांच दशक पहले किसी फिल्म में ऐसे दृश्यों और नायक के इतने विद्रोही रुख के बारे में सोचा भी नहीं जाता था। क्योंकि, तब फिल्म का नायक एक सद्चरित्र और सामाजिक होता था। भगवान को मानता था और परिवार के प्रति अपने दायित्व समझता था। पर, 'दीवार' फिल्म का नायक उस दौर के सारे नायकीय गुणों से परे था। जबकि, फिल्म में नायक के नास्तिक होने के बावजूद उसका कुली के बिल्ला नंबर 786 के प्रति उसकी आस्था बनी रहती है। फिल्म के अंत में जब छोटा भाई उसे गोली मारता है, तो यही बिल्ला उसके हाथ से छिटक जाता है।

फिल्म में अमिताभ डॉकयार्ड के कुली की भूमिका में हैं, जहां के मजदूरों से वहाँ के गुंडे हफ्ता वसूली करते थे। एक दिन ये गुस्सैल कुली उन बदमाशों से भिड़ जाता है। लेकिन, उससे पहले अमिताभ का एक डायलॉग उस भिड़ंत का संकेत देता है। वो साथ काम करने वाले रहीम चाचा से कहता भी हैं 'जो पच्चीस बरस में नहीं हुआ, वो अब होगा। अगले हफ्ते एक और कुली इन मवालियों को पैसे देने से इंकार करने वाला है।' जब ये हफ्ता वसूली करने वाले उसे ढूंढ़ रहे होते हैं, तब ये कुली उनके गोदाम में ही उनका इंतजार कर रहा होता है! ये वो दृश्य था, जिसे फिल्म में सबसे ज्यादा तालियां मिली थी। उस दृश्य में एक डायलॉग था 'पीटर तेरे आदमी मुझे बाहर ढूंढ रहे हैं और मैं तुम्हारा यहां इंतजार कर रहा हूं।' वे गोदाम का दरवाज़ा अंदर से बंद करके चाभी पीटर की तरफ फेंकते हुए कहते हैं 'ये चाभी अपनी जेब में रख ले, अब ये ताला मैं तेरी जेब से चाभी निकालकर ही खोलूंगा!' फिल्म के इन दृश्यों ने ही अमिताभ के नायकत्व को चिरस्थाई बनाया था। यही वजह थी कि वे उस दौर की नई पीढ़ी के आक्रोश का प्रतीक बन गए थे। फिल्म में भाइयों के बीच का एक दृश्य भी यादगार है। इसमें स्मगलर बना बड़ा भाई आक्रोश में छोटे भाई से कहता है 'आज मेरे पास बंगला है, गाड़ी है, बैंक बैलेंस है, तुम्हारे पास क्या है? सामने खड़ा शशि कपूर धीमी आवाज़ में कहते हैं 'मेरे पास मां है।' छोटे भाई के इस जवाब से अमिताभ का सारा दंभ धराशाई हो जाता है। फिल्म के अंतिम दृश्य में नास्तिक नायक का मंदिर में माँ की गोद में दम तोड़ना भी दर्शक भूल नहीं पाए।

1975 के साल को हिंदी फिल्मों के कभी न भूलने वाले समयकाल के रूप में इसलिए भी गिना जाता है, कि इस साल में चार ऐसी फ़िल्में आई, जो कई मामलों में मील का पत्थर बनी! शोले, धर्मात्मा, जय संतोषी मां और 'दीवार' ने कमाई के मामले में भी रिकॉर्ड बनाया। उस साल तीन फिल्मों ने 'दीवार' से ज्यादा कमाई की। लेकिन, उससे भी 'दीवार' का जादू कम नहीं हुआ। सबसे कम लागत में बनी 'जय संतोषी माँ' ने ज्यादा ज्यादा कमाई की थी। जबकि, एक करोड़ रुपए 'दीवार' ने तब कमाए, जब टिकट दर डेढ़ से तीन रुपए हुआ करती थी। 'दीवार' ने 1976 में साल की 'बेस्ट मूवी' के ख़िताब के साथ छह फिल्मफेयर अवॉर्ड जीते। सर्वश्रेष्ठ सहअभिनेता व सहअभिनेत्री को छोड़कर सभी अवॉर्ड 'दीवार' के खाते में गए थे। आज 50 साल बाद इस फिल्म के 12 में से 10 बड़े किरदार दुनिया में नहीं हैं। अमिताभ बच्चन के अलावा नीतू सिंह ही हैं, जिन्होंने इस फिल्म में मुख्य भूमिकाएं निभाई थी। लेकिन, फिल्म को उस दौर के दर्शक नहीं भूले और न इस दौर के दर्शक!

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

क्राइम थ्रिलर ओटीटी पर 5 भाषाओं में रिलीज

25 अप्रैल को यह फिल्म सिनेमाघरों में रिलीज हुई। यह फिल्म 2 घंटे 44 मिनट की है। इसकी कहानी और डायरेक्शन इतना शानदार था कि एक महीने से इसका सिनेमाघरों में सफर खत्म नहीं हुआ। 50 करोड़ के बजट वाली इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर लगभग 231 करोड़ रुपए से ज्यादा की कमाई की और ये ब्लॉकबस्टर बन गई। इसके शानदार बॉक्स ऑफिस सफर को देखते हुए ओटीटी प्लेटफॉर्म ने इसकी ओटीटी रिलीज को कुछ समय के लिए टाल दिया था। लेकिन, अब ये ओटीटी पर रिलीज हो गई और अब घर बैठे इस फिल्म का मजा लिया जा सकता है।

हम बात कर रहे हैं मलयालम सिनेमा के सुपरस्टार मोहनलाल की फिल्म 'थुडरुम' की। जिसका सिनेमाघरों में शानदार सफर रहा। 'थुडरुम' का निर्देशन तरुण मूर्ति ने किया। आज यानी 30 मई से यह फिल्म ओटीटी प्लेटफॉर्म जिओ

हॉटस्टार पर स्ट्रीमिंग के लिए उपलब्ध होगी। दिलचस्प बात यह कि ये फिल्म मलयालम के अलावा हिंदी, तमिल, तेलुगु और कन्नड़ भाषाओं में भी देखी जा सकेगी। इस तरह मोहनलाल के हिंदी भाषी फैन्स के लिए यह किसी गुड न्यूज से कम नहीं है।

मोहनलाल ने 'थुडरुम' के साथ मलयालम सिनेमा में अपनी एक्टिंग का लोहा मनवाया है। मार्च में उनकी फिल्म 'एल2 ः एम्पुरान' रिलीज हुई थी। इसने बॉक्स ऑफिस पर 269 करोड़ रुपए का कारोबार किया। अब उनकी 'थुडरुम' भी यह करिश्मा कर चुकी है। हालांकि, इस साल उनको दो और फिल्में अभी रिलीज होना बाकी है। 'थुडरुम' में मोहनलाल के अलावा शोभना, प्रकाश वर्मा, फरहान फासिल और मणियंपिल्ला राजू जैसे कलाकारों ने भी महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाई हैं।

जन्म शताब्दी वर्ष पर विशेष

वटवृक्ष की छाया से निकले निर्देशक थे राज खोसला

अशोक जोशी

एक कहावत है कि वटवृक्ष की छाया में पौधे पनपते नहीं हैं। यह बात फिल्म निर्देशक राज खोसला पर सोलह आने साबित होती है। यदि उनके वट वृक्ष अर्थात गुरूदत्त उन्हें अपनी छाया से मुक्त नहीं करते तो फिर राज खोसला अलग होते। राज खोसला के गुरु ऐसे वैसे

निर्देशक नहीं बल्कि देश के जाने माने निर्माता निर्देशक और अभिनेता गुरुदत थे, जिनकी छाप हमेशा ही राज खोसला के काम में दिखाई दी। खासकर गीतों के चयन और फिल्मांकन में राज खोसला ने हमेशा गुरुदत्त के पद चिन्हों पर ही चलना पसंद किया।

इस समय राज खोसला की जन्म शताब्दी मनाई जा रही है जिसके अन्तर्गत उनकी फिल्मों सीआयडी, मेरा गांव मेरा देश और दो रास्ते का प्रदर्शन किया जा रहा। राज खोसला का जन्म 31 मई 1925 को पंजाब के लुधियाना में हुआ था। उनकी शुरुआती पढ़ाई पंजाब में ही हुई। वह बचपन से गायक बनना चाहते थे, लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। वह भारतीय सिनेमा के एक ऐसे निर्देशक बन गए, जिन्होंने इंडस्ट्री को कई सुपरहिट फिल्में दी। राज का रुझान बचपन से संगीत की ओर था। शौक के चलते उन्होंने आकाशवाणी में बतौर अनाउंसर और प्लेबैक सिंगर काम किया। फिर, वह 19 साल की उम्र में संगीतकार बनने के लिए बंबई आ गए। बंबई में वह गायक बनने की तलाश में संघर्ष कर रहे थे। उन्हीं दिनों में राज की दोस्ती देव आनंद से हुई।

राज खोसला 1948 के लगभग चेतन आनंद, देवानंद और विजय आनंद के साथ पाली हिल में एक साथ रहने लगे। उनका चेतन आनंद की पत्नी उमा आनंद से बहुत स्नेह था। इस बीच राज खोसला फ़िल्म इंडस्ट्री में अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्ष करते रहे। उन दिनों देव आनंद अपने प्रोडक्शन हाउस की फिल्म के लिए अपने दोस्त गुरु दत्त को बतौर डायरेक्टर नियुक्त किया था। काम की तलाश कर रहे राज खोसला से देव आनंद ने पूछा कि क्या वह गुरु दत्त के असिस्टेंट डायरेक्टर के तौर पर काम करेंगे? इस पर उन्होने ने तुरंत हां कह दी और गुरुदत्त के साथ काम कर फिल्म बनाने की बारीकियों को सीखा। 26 साल की उम्र में राज ने 1951 में आई फिल्म बाजी में सहायक निर्देशक के तौर पर काम किया। राज ने चार साल तक गुरुदत्त के साथ सहायक

निर्देशक के तौर पर काम किया। फिर, वह निर्देशक बन गए। गुरु दत्त ने अपने प्रोडक्शन हाउस की फिल्म सीआईडी में राज खोसला को निर्देशक के तौर पर ब्रेक दिया। फिल्म में देव आनन्द और वहीदा रहमान मुख्य भूमिका में थे।

'सीआईडी' की सफलता से खुश होकर गुरुदत्त ने उन्हें एक कार भेंट की । तब कार की चाबी लेते हुए राज खोसला ने उनसे कहा कि आप जैसे वट वृक्ष की छाया में मुझ जैसा पौधा कैसे पनप सकता है। 'सीआईडी' का निर्देशन भले ही मैने किया लेकिन लोग तो इसे गुरुदत्त की फिल्म ही मानते है। यह सुनकर गुरुदत्त ने उन्हें अपने अनुबंध से मुक्त कर स्वतंत्र रूप से निर्देशन के लिए आजाद कर दिया। लेकिन, देव आनंद ने उनका साथ नहीं छोड़ा और उन्हें अपनी फिल्म काला पानी, सोलहवां साल और 'बम्बई का बाबू' के निर्देशन का भार सौंपा। राज खोसला ने भी इन फिल्मों में अपनी श्रेष्ठता साबित करते हुए देव आनंद जैसे स्टार को फिल्म 'काला पानी' के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का फिल्मफेयर पुरस्कार दिलवा कर बतौर अभिनेता उनका कद ऊंचा किया।

'गाइड' से चेतन आनंद के अलग हो जाने पर विजय आनंद से पहले 'गाइड' का निर्देशन राज खोसला ही करने वाले थे। लेकिन। 'सोलहवां साल' के दौरान एक सिक्वेस पर वहीदा रहमान से

हुई अनबन के चलते वहीदा रहमान ने राज खोसला के साथ कभी काम न करने का निर्णय लिया था। जिसके चलते वहीदा रहमान ने 'गाइड' करने से इंकार कर दिया। लेकिन, देव आनंद वहीदा के सिवा किसी और को नहीं चाहते थे। लिहाजा राज खोसला का अलग होना पडा। यहां से राज खोसला के एक नए रूप को दर्शकों ने देखा।

साल 1964 में रिलीज हुई उनकी फिल्म 'वो कौन थी' ने तहलका मचा दिया था। कहा जाता है कि इसी फिल्म से बॉलीवुड में सस्पेंस फिल्मों की शुरुआत हुई थी। मूलतः यह फिल्म गुरुदत्त साधना को लेकर 'राज' नाम से बनाने वाले थे जिसके लिए उन्होंने मदन मोहन को साइन भी कर लिया था। लेकिन, किसी कारण से यह फिल्म नहीं बन पाई तो राज खोसला ने गुरुदत्त से इजाजत लेकर इसका निर्माण और निर्देशन किया। इस फिल्म में उन्होने अपनी हीरोइन साधना को इस तरह से पेश किया था कि साधना के फैंस उनकी असल इमेज को लेकर भ्रमित हो गए थे। राज खोसला अपनी फिल्मों में हीरोइनों के साथ आइकॉनिक सीन के लिए भी जाने जाते हैं। कहा जाता है कि इसी फिल्म से बॉलीवुड में सस्पेंस फिल्मों की शुरुआत हुई थी। राज खोसला ने फिल्मों में अभिनेत्रियों को दमदार रोल दिए। साथ ही उन्होंने हिंदी सिनेमा में सस्पेंस थ्रिलर फिल्मों की शुरुआत की थी।

राज खोसला ने वहीदा रहमान, साधना, आशा पारेख, मुमताज और नूतन जैसी अभिनेत्रियों के साथ काम किया और उन्हें खास पहचान दिलाई। महिला प्रधान फिल्मों के कारण उन्हें वुमन डायरेक्टर भी कहा गया। उन्होंने अभिनेत्रियों को अपनी फिल्मों के जरिए हिंदी फिल्म जगत में अलग पहचान दिलाई या यूं कह सकते हैं कि उन्होंने उस दौर में अभिनेत्रियों को उनके सर्वश्रेष्ठ रूप में दिखाया। राज खोसला ने 1950 से लेकर 1980 तक के दशक तक हिंदी फिल्म उद्योग में निर्देशक, निर्माता और पटकथा लेखक के रूप में राज किया।

सीआईडी के बाद राज खोसला राज खोसला द्वारा निर्देशित अन्य फ़िल्मों में मैं तुलसी तेरे आंगन की, दो रास्ते, सोलहवां साल, काला पानी, एक मुसाफिर एक हसीना, चिराग, मेरा साया, बंबई का बाबू, कच्चे धागे, मेरा गांव मेरा देश, रॉकी, नहले पर दहला, दो बदन, शरीफ बदमाश आदि प्रमुख हैं। उनकी कुछ फ़िल्में ऐसी थी, जो अस्सी के दशक में व्यावसायिक तौर पर सफल नहीं रही। इन फ़िल्मों में दासी, तेरी मांग सितारों से भर दूं, मेरा दोस्त मेरा दुश्मन और माटी मांगे खून शामिल है। हालांकि, वर्ष 1984 में प्रदर्शित फ़िल्म 'सन्नी' जिसमें वहीदा रहमान ने गिले शिकवे भुलाकर काम किया उसने बॉक्स ऑफ़िस पर और व्यापार किया। वर्ष 1989 में प्रदर्शित फ़िल्म 'नकाब' राज खोसला के सिने करियर की अंतिम फ़िल्म साबित हुई। 9 जून 1991 में उनका निधन हो गया। उनके पुत्र मिलन लुथरिया उनकी परम्परा से मिलती जुलती फिल्में बनाकर बॉलीवुड में जमे हुए हैं।

घोड़े से कार तक... बाबा भारती !

प्रकाश पुरोहित

मौ उस सुनसान सड़क पर अकेली लड़की धूप में खड़ी 'लिफ्ट' का इंतजार कर रही थी। तभी साठ पार वृद्ध कार में निकले तो लड़की ने हाथ दिखाया। पोती की उम्र की लड़की, दूर-दूर तक कोई दूसरा साधन नजर नहीं आ रहा था, तो उन्होंने कार रोक दी।

'कहां जाना है?' अगली सीट का दरवाजा खोलते उन्होंने पूछा।

'बस, अंकल, बॉम्बे हॉस्पिटल तक ही छोड़ दें, वहां से तो कुछ मिल जाएगा।' कहते हुए लड़की बगल की सीट पर बैठ गई। उसके गले में परिचय-कार्ड लटका था, जो शायद किसी अस्पताल का था।

'कहां की हो, इंदौर की तो नहीं लगती हो?'

'हां जी, ग्वालियर से हूं, चार साल से यहीं अस्पताल में काम करती हूं। आज इधर पेशेंट देखने आई थी, लेकिन कोई

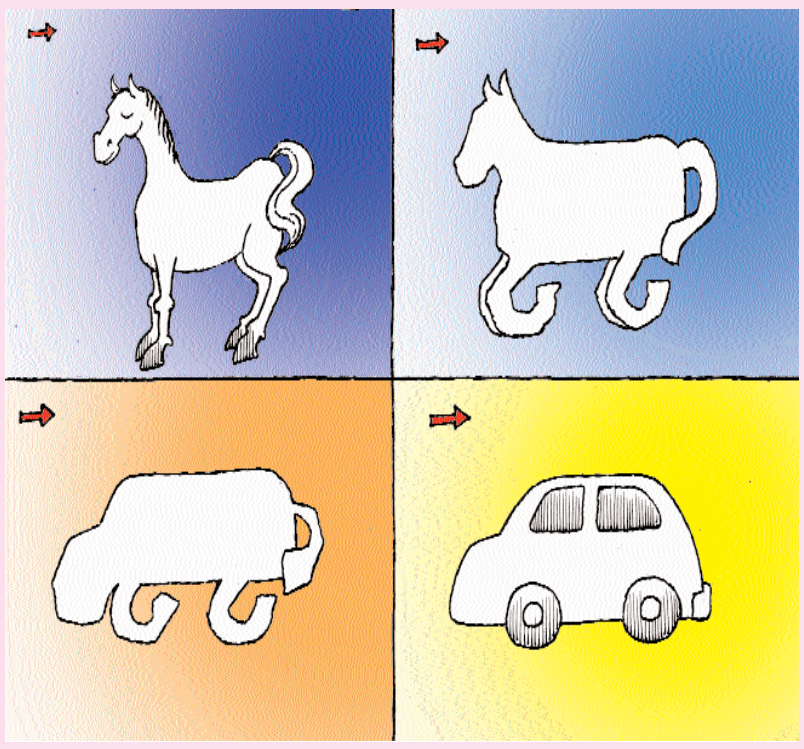

साधन ही नहीं है। इतने लोगों को हाथ दिखाया, खाली कार में जा रहे थे, लेकिन कोई रुकने को तैयार नहीं। आप अच्छे हैं, जो रोक दी, नहीं तो धूप में बीमार ही हो जाती मैं तो।' लड़की ने प्यार से देखा और कहा।

'सही है, खाली कार जा रही है तो किसी को बैठा लेने में क्या दिक्कत है, लेकिन वही बात है ना, लोग किसी की मजबूरी समझते ही नहीं हैं।' वृद्ध ने अनुभव निचोड़ दिए। लड़की ने अंकल के गाल पर प्यार से हाथ फेर दिया। अंकल हड़बड़ा गए!

'आप जैसे अच्छे लोग मिलते ही कहां हैं आजकल, यह भी नहीं सोचते कि ये लड़की भी किसी की बेटी होगी। फुर्र से निकल जाते हैं, जैसे कोई, कुछ छीन लेगा।' लड़की यूं बातें करने लगी, जैसे पुराना रिश्ता हो। कोई हिचक नहीं, परेशानी नहीं!

'बता देना, तुम्हे कहां उतरना है...!'

'आपका साथ इतना अच्छा लग रहा है कि छोड़ने का मन ही नहीं कर रहा है। आपसे फिर मिलना कब होगा, ये लीजिए, मेरा कार्ड है, आप कभी भी फोन लगा लेना, मैं आ जाऊंगी। वैसे एमवाय के पीछे सरकारी फ्लैट में रहती हूं, आप भी अगर उधर से निकलें तो मेरे घर आ सकते हैं। एकदम अकेली ही रहती हूं। मुझे अच्छा लगेगा आप आएंगे तो। बढ़िया खाना खिलाऊंगी।' लड़की पूरे उत्साह में थी। वृद्ध को कार्ड थमा दिया। वृद्ध भी खुश कि आजकल की लड़कियां कितनी बदल गई हैं कि कोई परहेज नहीं।

'हां, कभी फोन करूंगा, अगर जरूरत हुई तो...!' अंकल ने कहा।

'बस... आप तो यहीं रोक दीजिए...!' सुनसान जगह पर लड़की बोली!

'तुम्हे तो बॉम्बे हास्पिटल जाना था ना...?' कार रोकते हुए अंकल ने पूछा।

'याद आया, यहां पास ही मेरी मौसी के यहां आज पूजा है और वहीं खाना भी है।' लड़की ने कहा तो अंकल ने कार साइड से लगा दी।

'एक मदद और कर दीजिए, आप कितने अच्छे हैं, इसलिए बोलने का मन हो रहा है।' कहते हुए अंकल के पैर पर हाथ रख दिया।

'पूजा के लिए कुछ सामान ले जाना है, लेकिन आज मेरे पास दस रुपए भी नहीं हैं। अस्सी हजार रुपए कमाती हूं हर माह, लेकिन इस बार घर भेजने पड़ गए तो एकाउंट खाली हो गया, आप मुझे एक हजार रु. दे दें, मैं वापस कर दूंगी। आप आकर ले जाना मेरे यहां से या आप जहां कहोगे, मैं आ जाऊंगी।' कहते हुए उसने अंकल की कमीज की ऊपरी जेब में हाथ डाल दिया और सारे पैसे निकाल लिए।

'ये क्या कर रही हो, जेब से पैसे क्यों निकाल लिए, क्या बदतमीजी है?'

'अंकल आप तो बुरा मान गए, ये देखिए पूरे पांच हजार हैं, ये मैं रख लेती हूं। सौ का नोट आपके रास्ते के लिए रखे दे रही हूं।' कहते हुए उसने सौ का नोट जेब में डाल दिया।

'ये क्या कर रही हो तुम, जोर-जबर्दस्ती है क्या, एक तो तुम्हें लिफ्ट दी और तुम अब मनमानी कर रही हो... गलत बात है, मेरे पैसे वापस रखो जेब में।'

'अंकल, ये तो अब वापस नहीं जाएंगे, कहा ना जब भी मन हो आ कर ले जाना।'

'तुम बदतमीजी कर रही हो, यह ठीक नहीं है।' अंकल पसीना-पसीना हो रहे थे।

'अभी तो आपने देखी ही कहां है बदतमीजी, ज्यादा चिल्लाने की जरूरत नहीं है। अभी शोर मचा दूंगी तो इज्जत के भाजी पाले हो जाएंगे कि लिफ्ट देने के बहाने साथ चलने को कह रहे हैं और पैसे भी दे रहे हैं, सोच लीजिए, क्या अच्छा रहेगा।' लड़की ने कार का दरवाजा खोला और 'बाय अंकल, सी यू' कहते हुए उतर गई और ये जा, वो जा!

कुछ रोज बाद अंकल ने बताए नंबर पर फोन लगाया तो **'यह नंबर सर्विस में नहीं है'** आवाज आ रही थी। अंकल ने कार्ड फाड़ कर फेंक दिया। उन्हें ऐसा लगा, जैसे पांच हजार रुपए फाड़ दिए हों। हीरामन ने फिर तीसरी कसम खाई... कि किसी को लिफ्ट नहीं देंगे, फिर कोई कितनी ही मुश्किल में क्यों ना हो। बाबा भारती भी आज बहुत याद आ रहे थे वृद्ध अंकल को!

समय रहते ज़रूरी काम कर लीजिए

और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

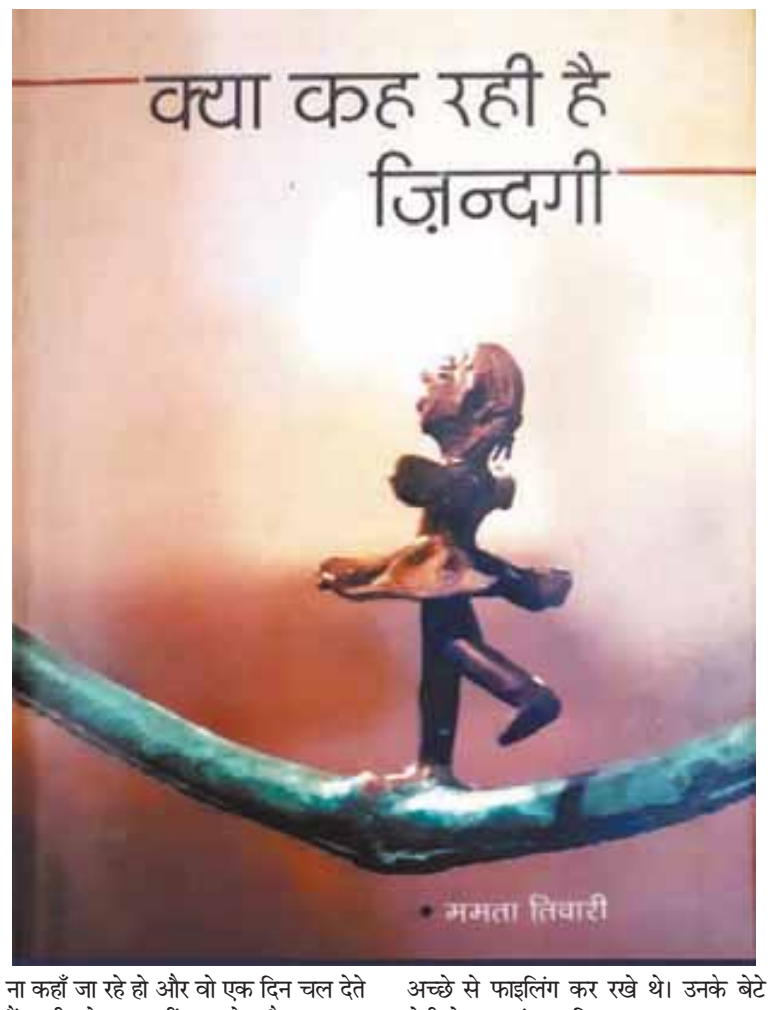

ह म सब उम्रदराज़ दोस्त महफिल में गप्पे कर रहे थे। बातें करते करते रूख मुड़ गया इस बात की ओर कि अब समय रहते सबको वसीयत लिख देनी चाहिए। कुछ ने पहले ही लिख भी दी थी। कुछ तैयार हो गए। एक दो बिल्कुल बिदक गए। उन्हें बुरा लगा मानो हम ए साबित कर रहे हैं कि वो कल ही दुनिया छोड़ के जा रहे हैं।

मेरी कॉलोनी के एक कपल थे। उनके पति काफी डॉमिनेटिंग थे। बीवी को इस लायक नहीं समझते थे कि उसे पूरी संपत्ति की जानकारी दी जाए। दोनों लड़कियाँ विदेश में थी। आलीशान बंगला, रहन सहन सब वो ही मैनेज करते थे अचानक पैरालिसिस का अटैक आया वो घबरा गई। अस्पताल वालों ने एक ऑपरेशन, दवाईयों और रूम का लंबा बिल थमाया। इतनी जल्दी कोई रिश्तेदार भी आगे नहीं आया। फिर भी कुछ भले लोगों ने उन्हें रकम उधार दी। वो गुज़र गए। लड़कियाँ आई। सबने बड़ी मशक्कत की मुश्किल से कुछ एफडी और इंश्योरेंस ढूंढ पाए। किराए का छोटा फ्लैट ले के माँ को शिफ्ट किया। बंगला गाड़ी बेच दिया और वो अकेली घर में कैद हो गई। एक दिन मेरे पास आई बोली, उन्हें अवसाद हो रहा है। मैं जानती थी, वो अच्छा लिखती हैं। उन्हें लेखिका संघ में भेजा। उन्होंने ऑटो से जाना सीखा। पैसे की तंगी बच्चियाँ मदद करके दूर कर रही थी पर पढ़े लिखे इतने बड़े अफसर की वसीयत कहीं नहीं मिली। थोड़े समय बाद वो भी गुज़र गई।

एक और किस्सा मेरे पास है। बहुधा पत्नियों की आदत होती है जब पति कुछ बताना चाहता है तो वो कहती है अरे आप हो ना कहाँ जा रहे हो और वो एक दिन चल देते हैं। पत्नी को कुछ नहीं पता होता है। पर भला हो उनका वो अपनी पत्नी को जानते थे। उनके बच्चे भी अच्छे थे। उन्होंने सारे पैसे, एसेट्स अच्छे से फाइलिंग कर रखे थे। उनके बेटे बेटी ने सब संभाल लिया।

तीसरी फैमिली एक थी जो अमृत बूटी खाकर आई थी। उन्हें वसीयत के नाम से ही चिढ़ थी पीढ़ी दर पीढ़ी परदादा, दादा, पिता और बेटा सबको पत्नियों को ना बताने की आदत और वकीलों को पैसा खिलाकर बची खुची प्रापर्टी की झूठी वसीयत तैयार हुई जो ऊँट के मुँह में जीरे के समान थी। अभी भी उनके यहाँ यही परंपरा चल रही है उन्हें वसीयत लिखने से गुरेज है।

रिश्तों का सच मरने के बाद पता चलता है। तब तक आप इस दुनिया से जा चुके होते हैं और जिस परिवार के लिए आप कहते थे, अरे मुझे वसीयत क्या करना मेरे दोनों बेटे अपनी माँ का खयाल रखेंगे, रूपए पैसे को लेकर वो कभी नहीं झगड़ सकते। अजी वो झगड़ें। दुनिया के सामने उनकी मृत देह उठने से पहले ही झगड़े। मैं ये भी नहीं कहना चाहती कि सब परिवार ऐसे ही होते हैं, पर उनमें कोई एक सेक्रीफाइस करता है बोल नहीं पाता है और उसका परिवार भी फंस जाता है।

बंटवारा करना शायद आपको ऐसा लगता है जैसे आप परिवार के टुकड़े कर रहे हो, बिल्कुल नहीं। ये समझदारी है। वसीयत करिए जब तक आप हैं अपने पास रखिए। पहले से दे देना भी मूर्खता है। आपके ही बच्चे आपकी बेकदरी कर सकते हैं। हाँ, ज़रूरत पड़ने पर उन्हें दीजिए। सब नहीं, उनके हिस्से में से ही दीजिए पर पूरा मत दीजिए। ये समय की मांग है घर तोड़ने का प्रस्ताव हरगिज़ नहीं है। चीजें सुलझी हुई होंगी तब ही परिवार के सारे सदस्य एकजुट हो सुबह सवेरे खुश दिमाग से पूछते रहेंगे और क्या कह रही है ज़िंदगी?

सुना है भरोसे पे दुनिया कायम है,
वो दुनिया कहाँ है ज़रा हमें भी बताओ।

कलाकार पर पाबंदी... सरकार का डर!

❐ यूके से
प्रज्ञा मिश्रा

ब र्लिन फिल्म फेस्टिवल (2012) के पहले दिन स्टेशन से निकलते ही **'जफर पनाही कहां हैं'** की तख्ती लिए लोग दिखाई दिए। थोड़ा आगे भीड़ में तब्दील हो गए। यह तो समझ आ गया कि कोई खास इंसान है, लेकिन यह नहीं पता था कि जफर पनाही का फिल्म फेस्टिवल से क्या लेना-देना और भीड़ इस इलाके में क्या कर रही है।

जफर पनाही इरान के फिल्मकार हैं। जफर पनाही को इरान की सरकार ने फिल्म बनाने और देश छोड़ने के लिए बैन किया था, लेकिन फिर भी इस जुनूनी फिल्मकार ने 2000 से 2025 तक पंद्रह फिल्में बनाईं। सभी फिल्में इरान के कानून के हिसाब से गैर-कानूनी हैं। इनकी फिल्में दुनिया भर के फिल्म फेस्टिवल में दिखाई-सराही जाती हैं, लेकिन खुद अपने ही देश में यह फिल्में सजा की वजह हैं। पहली ही फिल्म 'व्हाइट बलून' के लिए 1995 में

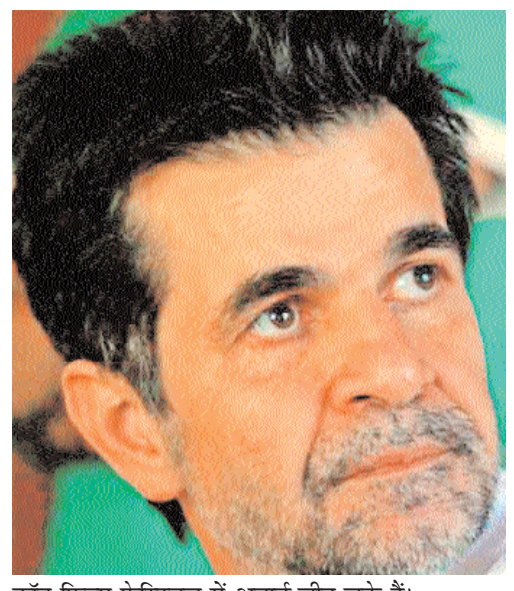

कॉन फिल्म फेस्टिवल में अवार्ड जीत चुके हैं।

पच्चीस बरस में जफर पनाही कई बार गिरफ्तार हुए हैं। कई बार कोठरी में रखा जाता था कि चलें तो दीवारें टकराती थीं। उनसे सवाल-जवाब करने वाले आंखों पर पट्टी बांध कर पूछते थे। आज भी उन्हें वही आवाजें सुनाई देती हैं। उन दिनों की यादों को अपनी नई फिल्म **'इट वाज जस्ट एन एक्सीडेंट'** में लेकर पनाही जब कॉन पहुंचे तो यही आवाज थी कि भले ही पनाही की बेहतरीन फिल्म न हो लेकिन इनके सिनेमा के लिए प्यार, जुनून, सच के साथ खड़े होने की जिद, सरकार से नाराजी दिखाने की लगातार हिम्मत से इन्हें पाम डी'ओर अवार्ड देना चाहिए। पिछले हफ्ते ग्रैंड थिएटर लुमियर में जब उनका नाम आया तो खुशी का ठिकाना नहीं था। उस शाम शहर में सिर्फ एक ही इंसान की बात हो रही थी- जफर पनाही, जो पच्चीस बरस बाद अपने देश से बाहर फिल्म फेस्टिवल में आया है। इससे पहले उनकी फिल्में ही देश से बाहर आती रही हैं। उन्हें अपनी फिल्मों को देश से बाहर भेजने के लिए अनगिनत जतन करने पड़े। यहां तक कि यूएसबी में कॉपी कर केक में छिपा भेजा है।

इतनी पाबंदियों के बावजूद पनाही आवाज बरकरार रखने की कोशिश करने वाले इकलौते ऐसे फिल्मकार हैं, जो अपनी सरकार के खिलाफ न सिर्फ आवाज उठाए हैं बल्कि फिल्मों से उस आवाज को रहती दुनिया तक बरकरार रखने का इंतजाम भी कर चुके हैं। अगर सरकार कलाकार से खफा है, नाराज है, डर रही है, इसका मतलब है कि कलाकार सही रास्ते पर है और यह बात जफर पनाही से बेहतर किसी और पर फिट नहीं बैठती।

शहादत की विभूति से फिर जन्मे भभूत सिंह

स्वातंत्र्य वीर

राजीव शर्मा

लेखक रिटायर्ड आईएएस हैं।

आ जादी के अठहत्तर वर्ष बाद एक स्वातंत्र्य वीर अपनी अस्थियों की राख से फिर उठ खड़ा हुआ हो रहा है। पचमढ़ी के जनजातीय वनांचल की रियासत के मुखिया भभूत सिंह अंततः अपनी जमीन पर एक प्रतिमा के रूप में विराजमान होने को हैं।

भारत के प्रथम राष्ट्रव्यापी स्वातंत्र्य समर जिसे कुटिल ब्रिटिश सत्ता और उसके मानस पुत्रों ने सिपाही विद्रोह बताकर तुच्छ बताने का षड्यंत्र किया अब उसके परखच्चे उड़ रहे हैं। पचमढ़ी में दुष्ट डाकू फ़ोर्सिथ के नाम पर संग्रहालय मेरा खून जलाता था जबकि भभूत सिंह का बलिदान हमारी राष्ट्रीय

आत्महीनता की राख में दबा पड़ा था। 1857 के अधिकांश नायक अज्ञात अनाम विस्मृत हैं और दस्युओं के नाम पर संग्रहालय और संस्थाएं हैं। मप्र तो छोड़िए सतपुड़ा के अधिकांश लोगों ने बलिदानी राजा भभूत सिंह का नाम नहीं सुना। 1857 की क्रांति को जड़ मूल से मिटाने कैप्टन फ़ोर्सिथ जब पिपरिया पंहुचा तो स्वाभिमानी राजा भभूत सिंह ने ब्रिटिश राक्षसों को सहयोग करने से मना कर दिया।

मुफ्तखोर फोर्सिथ के लिये जब स्थानीय थानेदार मुर्गे माँगने आया तो भभूत सिंह ने उसे ख़ाली हाथ लौटा दिया। डाकू फ़ोर्सिंथ ने अपनी सैन्य टुकड़ी भेजकर राजा को गिरफ़्तार कर लिया। राष्ट्र भक्त भभूत सिंह चाहते तो जंगलों में छिपे क्रान्ति वीरों की जानकारी देकर अपना जीवन और राज्य बचा सकते थे किंतु उन्होंने राजपथ छोड़कर अग्निपथ चुना। वे शहीद हो गए पर झुके नहीं। उन्हें विस्मृति और उपेक्षा के पाताल से निकाल कर मध्यप्रदेश शासन ने अभिनन्दनीय कार्य किया है।

महान क्रांतिकारी राजा शंकर शाह और युवराज रघुनाथ शाह की तरह ही एक और महान बलिदानी अपनी ही राख से पुनर्जीवित हुआ है। आइए, श्रद्धा से विनत हों।

सिनेमा में शास्त्रीय गायन

प्रो. परिचय दास

लेखक नव नालंदा महाविहार विवि में प्राध्यापक हैं।

सुमन कल्याणपुर: सर्वोत्कृष्टता की हक़दारों में से एक

सु मन कल्याणपुर एक ऐसा नाम जो जैसे धुन बनकर हमारे अंतर्मन में उतरता है–धीरे-धीरे, सधे हुए सुर में, बिना कोई शोर किए। उनके स्वर में एक संकोच है, एक झिझक है, जो मानो आत्मा की तहों से उठती है और सीधे मन के रेशमी कोनों में समा जाती है। वह गायिका नहीं, जैसे कोई आत्मा की पुरानी पहचान हो–स्मृति की वह झील, जो सतह से गहरी है, गहराइयों से शांत, और जिसकी हर लहर में कोई अनुपस्थित राग बजता रहता है।

जब लता और आशा की स्वर-छायाओं में सारा आसमान बाँध लिया गया था, तब एक कोमल चाँदनी सुमन बनकर बरस रही थी, बिना किसी घोषणा के। वह मुख्यधारा में नहीं थीं, पर उनकी धारा कहीं अधिक निर्मल, अधिक निस्पृह और अधिक पारदर्शी थी। जैसे कोई पुष्प जो जंगल में खिला हो और जिसकी गंध केवल वे पाते हों जो सचमुच खोजने आए हों।

उनकी आवाज़ में कोई प्रदर्शन नहीं, कोई आग्रह नहीं–बस एक लहर है, एक फिसलन है जो दिल के भीतर उतरती चली जाती है। उनके गीतों को सुनते हुए लगता है कि यह गायक नहीं रही, बल्कि कविता खुद गा रही है। उनकी गायनशैली में 'स्वर' और 'शब्द' के बीच कोई सीमा रेखा नहीं रहती–वह दोनों को एक-दूसरे में घुला देती हैं, जैसे घुलता है बचपन का सपना माँ की लोरी में।

उनके गीत सुनते ही जैसे बादल भीतर उमड़ते हैं, न केवल मौसम के बल्कि मन के भी। गीतों में जो लंबा आलाप होता।है, वह किसी गायिका की प्रदर्शन-कला ही नहीं, किसी रचयिता की आह भी है। उनके आलापों में कोई विशेष रियाज़ की चुनौती नहीं सुनाई देती–बल्कि एक आत्मीय सहजता, जैसे कोई बहुत पुराना प्रेमी किसी पुराने प्रेमपत्र को पढ़ते-पढ़ते अचानक रो पड़ता हो।

सुमन कल्याणपुर की आवाज़ में वह स्त्री बोलती है जो बहुत कुछ जानती है, पर सब कुछ कहती नहीं। वह प्रेम में आकंठ डूबी है, पर मांग नहीं करती। वह अपने आँसुओं से गीत को धो देती हैं, और फिर भी वह गीत कभी भीगता नहीं–वह सहेज लेता है। वह विरह को अनुभव करती हैं, पर उसे विलाप में नहीं बदलतीं–बल्कि उसे मौन के सौंदर्य में पिरो देती हैं। उनकी आवाज़ में विरह भी समर्पण बन जाता है और समर्पण भी एक रहस्य।

उनके सुरों में एक स्त्री का स्वाभिमान है, जिसे वे शब्दों से नहीं, स्वर की गहराई से कहती हैं। वह कभी किसी क्रांति का उद्घोष नहीं करतीं, लेकिन जब गाती हैं–तेरे खयाल में हम बेकरार रहते हैं, तो यह पंक्ति एक गूढ़ राजनीतिक वक्तव्य की तरह लगती है, जिसमें स्त्री का प्रेम उसकी आज़ादी बन जाता है।

सुमन के गीतों में कोई दंभ नहीं, कोई आत्मप्रशंसा नहीं। उनकी आवाज़ किसी भी साज से ऊँची नहीं उठती, बल्कि साज में ही बैठकर उसे अंदर से जीवंत कर देती है। वह संगीत की चुप्पी हैं, जिसकी अनुपस्थिति में शोर बहुत अधिक लगता है। उनकी आवाज़ में राग का अनुशासन है, लेकिन वह अनुशासन कभी कारावास नहीं बनता। वह नियमों के भीतर रहकर भी नयापन रचती हैं।

सुमन कल्याणपुर के स्वर एक ऐसी नदी हैं जो पहाड़ों को नहीं काटती, बल्कि उनकी गोद में बहती है। उनकी कोमलता किसी निर्बलता की नहीं, बल्कि एक परिपक्वता की निशानी है। उनकी आवाज़ में किसी बालिका की चंचलता नहीं, एक युवती की संकोच-भरी आँखें हैं, और एक स्त्री की नर्म अनुभूतियाँ। वह नायक को पुकारती नहीं, पर उनकी पुकार में जैसे अनसुना प्रेम की सबसे सच्ची भाषा बोल पड़ती है।

अगर प्रेम एक स्पर्श है जो शब्दों के बिना होता है तो सुमन कल्याणपुर की आवाज़ उसका सबसे सुंदर उच्चारण है। उनके गीत 'तेरी आँखों के सिवा दुनिया में रखा क्या है' को जब सुनते हैं तो शब्द अपनी पहचान खो देते हैं और केवल भाव शेष रह जाते हैं–यह कोई गायक की प्रतिभा नहीं, यह आत्मा की पारदर्शिता है।

सुमन कल्याणपुर को बार-बार सुना नहीं जाता–उन्हें एकांत में, चुपचाप और धीरे-धीरे पीया जाता है। वह गायक नहीं, एक ध्वनि हैं जो किसी पुराने मंदिर की घंटियों में अभी भी अनुगूंजित है। वह समय के भीतर समय की अनुपस्थिति हैं। उनका गायन एक अन्तर्लाप है, एक मौन स्मृति, एक कोमल नारीस्वर जो आज भी हमारे भीतर कहीं बज रहा है।

उनके बारे में सोचते हुए यही लगता है–अगर कोई कविता गा सके और गाते-गाते खुद को भुला दे, तो वही सुमन कल्याणपुर बनती है। वह कोई आवाज़ नहीं, बल्कि एक अहसास हैं–विरह में भी विनम्र, प्रेम में भी शालीन, और मौन में भी गायक।